यालिनी

हिंदी पाठमाला

(एन०सी०ई०आर०टी० (NCERT) द्वारा निर्धारित
पाठ्य-क्रम पर आधारित)

उत्तर-पुस्तिका

(भाग 6 से 8)

शिक्षक सहायता किताब
हिंदी कक्षा-6

पाठ 1 – बंदनी जननी

लिखित

1. (क) मातृभूमि को (ख) बिजली से (ग) महादेवी वर्मा
2. (क) प्रस्तुत पद्य में स्वतंत्रता से पहले की बात की जा रही है।
   (ख) भारतवर्ष को पुण्य की, कर्मभूमि कहा जा रहा है।
   (ग) इसका अर्थ है— वे देवता और देवी अब नहीं हैं। जिन्होंने इस देश के भाग्य की कभी परीक्षा ली थी।
3. (क) कवयित्री कहती है— मातृभूमि; तुझे हम आजाद कर देंगे गर्मी से हमारे हृदय की जंजीरें गल जाएँगी और लोहे की दीवारें मिट्टी में मिल जाएँगी। अपने शरीर का बलिदान देकर अँधेरे को हम उजाले से भर देंगे और तुम्हें स्वतंत्र कर देंगे।
   (ख) कवयित्री भारतवर्ष को पुण्य की कर्मभूमि बनाने की कह रही है।
   (ग) कवयित्री ने भारत को दीन इसलिए कहा है, क्योंकि अब वो देवी-देवता नहीं रहे, जिन्होंने भारत के लिए अपना बलिदान दिया था।

भाषा ज्ञान

1. सूरज, दिनकर
   चन्द्रमा, चाँद
   माँ, माता
   बिजली, विद्युत
   घन, मेघ
   आसमान, आकाश
   संसार, जगत
   ईश्वर, भगवान
2. दानव, प्रकाश, बंधन
   तीखा, पाप, गरम

पाठ 2– नीलू

लिखित

1. (क) उसके बच्चे को (ख) माँ के पेट की उठणता को
   (ग) ऊन की गेंद जैसा
2. (क) घ्राण शक्ति के कुंठित हो जाने के कारण लूसी लकड़बग्घे की गंध न पहचान सकी और अनायास ही उसका आहार बन गई।
   (ख) लूसी हिरणी के समान वेगवती, साँचे में ढली हुई देह, जिस पर काला आभास देने वाले भूरे-पीले रोम, बुद्धिमानी का पता देने वाली काली आँखें, सजग खड़े कान यही सब उसकी राजसी विशेषताएं थीं।
   (ग) नीलू की सहृदयता, समझदारी तथा विवेकशीलता, जीवों के लिए दया की भावना ही सबके लिए आश्चर्य का विषय था।
   (घ) (1) यहाँ शीतकाल के दिनों की बात हो रही है।
   (2) नीलू पक्षियों के बच्चे जो उड़ने में असफल होते थे, उनका सतर्क पहरेदार बन जाता था, जिससे कोई कुत्ता या बिल्ली उन्हें नुकसान न पहुँचा सके।
   (ङ) सबके सो जाने पर नीलू गर्मियों में बाहर लॉन में और सर्दियों में बरामदे में तख्त पर बैठ कर पहरेदारी का कार्य करता था। रात में कई-कई बार पूरे कंपाउंड का और पशु-पक्षियों के घर के चक्कर लगाता था।

(च) एक दिन पत्तियों की सरसराहट सुनी और देखा-खरगोशों के पास जंगली बिल्ला था। वह दौड़ कर वहाँ गया तो बिल्ला भाग गया। लेकिन खरगोशों को बाहर निकलने से रोकने के लिए वह रातभर ओस से भीगता हुआ सुरंग के द्वार पर खड़ा रहा।

(छ) यदि नीलू के खाने को अवज्ञा के साथ फेंक दिया जाता था तो वह उसे न तो देखता था, न ही खाता था। इसी बात से लेखिका चिन्तित रहती थी।

(ज) हिरणी के समान वेगवती, साँचे में ढली हुई देह, जिस पर काला आभास देने वाले भूरे पीले रोम, बुद्धिमानी का पता देने वाली काली छोटी आँखें, सजग खड़े कान, पिछले पैरों के टखनों को छूने वाली पूँछ, ये सब उसकी राजसी विशेषताएं थीं।

(झ) लूसी को जब सामान लाना होता था तो वे लूसी के गले में रुपए और सामग्री की सूची के साथ एक बड़ा थैला बाँध कर सामान लेने भेजते थे। इससे काम में कोई रुकावट नहीं होती थी। कभी-कभी तो कई-कई बार जाना पड़ता था।

(ञ) बड़े होने पर नीलू रोम के भूरे, पीले और काले रंगों के मिलन से जो रंग बना था, एक विशेष प्रकार का धूप-छांह हो गया था। कानों की चौड़ाई और नुकीलेपन में भी कुछ नवीनता थी। पूँछ अल्सेशियन कुत्ते के समान थी, पंजे भूटिये के समान मजबूत, चौड़े और मुड़े हुए नाखून, आँखों का रंग शहद के रंग के समान था। आकृति की विशेषता के साथ उसके बल और स्वभाव में भी विशेषता थी।

(ट) इस कथन से लेखिका का तात्पर्य है कि नीलू प्रिय से प्रिय खाद्य को भी यदि अवज्ञा के साथ फेंक कर दिया जाता तो नीलू न ही उसे देखता था, न ही खाता था। और किसी बात पर उसे झिड़क दिया जाता तो वह बिना मनाए सामने भी नहीं आता था।

(ठ) नीलू का ध्वनि ज्ञान इतना विस्तृत और गहरा था कि उससे कुछ कहना, भाषा जानने वाले मनुष्य से बात करने के समान हो जाता था। बाहर या रास्ते में कोई उससे कहता, गुरुजी तुम्हें ढूंढ रही हैं, तो वह विद्युत गति से चारदीवारी कूदकर कमरे में पहुँच जाता था।

(ढ) पशु-पक्षियों के साथ हमारा व्यवहार नम्र होना चाहिए।

(त) लेखिका के घायल होने पर नीलू उदास हो गया। उसने न कुछ खाया, न पिया। उसे अस्पताल लाया गया। नियमित रूप से अस्पताल जाने पर वह डॉक्टर-नर्स से परिचित हो गया।

भाषा ज्ञान

1. (क) वे (ख) उन्होंने, वह (ग) मुझे (घ) वह
   (ङ) उससे
2. लूसी, नीलू, पहाड़, नीलू, कुत्ता, पूँछ, दवा
3. पृथ्वी, निपुणता, अहंकार, श्रीगणेश
4. अ + समर्थ, अ + कुशल,
   परि + वेश, आ + कृति,
   नुकील + आपन, धाम + इर्मिक,
   घबर + आहट, उद + आरता,

पाठ 3 - गुफाओं की कला

लिखित

1. (क) गुफाओं को अपना आश्रय बनाया। (ख) विश्व सांस्कृतिक धरोहर
   (ग) मठ (घ) अजंता
2. (क) भीम बेटका के चित्रों में आखेट, नृत्य, घुड़सवारी के दृश्य, जानवरों की लड़ाई, हाथियों की सवारी, शहद निकालने, सजने सँवरने तथा शेर, चीते, हाथी, जंगली भालू, छिपकली का चित्रांकन अंकित है।
   (ख) अजंता की गुफाओं की खोज एक अंग्रेजी सैन्य टुकड़ी द्वारा हुई, जो उस ओर गश्त लगा रही थी बाद में अनेक शोधकर्ताओं, तथा इतिहासकारों ने इस प्राकृतिक चित्र गैलरी के रहस्य की खोज करने में रुचि दिखाई।
   (ग) गुप्तकालीन मूर्तिकला मध्यप्रदेश के विदिशा के समीप उदयगिरि की गुफाओं में देखने को मिलती हैं।

उदयगिरि की गुफाओं की सबसे अधिक प्रसिद्ध मूर्ति नृवराह अवतार की है।

(घ) शिकार की खोज में जंगल-जंगल भटक रहा मानव जब प्राकृतिक गुफाओं में रहने लगा और प्राकृतिक आपदाओं से अपने को सुरक्षित, महसूस करता हुआ उसने गुफाओं की शिलाओं को चित्रों से सजा दिया तभी से गुफाओं की शिलाचित्र की परंपरा आरंभ हुई।

(ङ) औरंगाबाद से लगभग 100 किलोमीटर दूर अजंता की गुफाएँ देखने को मिलती हैं। इन गुफाओं में सुन्दर नक्काशी वाले स्तंभ, अभूतपूर्व चित्र, मूर्तियाँ और बुद्ध की की अनेक प्रतिमाएं है। अजंता की गुफाएं इस प्रकार निर्मित की गई कि यहां प्राकृतिक प्रकाश स्वत: ही पहुंचता है। बृद्ध की प्रतिमाओं के मध्य का पवित्र वातावरण इन गुफाओं में देखने को मिलता है।

(च) एलोरा की गुफाओं में चट्टानों को काटकर हिन्दू मंदिर, बौद्ध विहार और जैन मठ निर्मित किए गए हैं जो धार्मिक समन्वय का सर्वोत्तम उदाहरण है। एलोरा के स्मारकों में सबसे महत्वपूर्ण कैलाश मंदिर है। नृत्य करते नटराज की प्रतिमा, चट्टानों पर शिव विवाह का दृश्य, कैलाश पर्वत में बैठे शिव-पार्वती, नंदी बैल की प्रतिमा आदि इसी के उदाहरण हैं। नक्काशीदार स्तंभ, दीवारों पर उकेरे दृश्य सभी अभिभूत करने वाले हैं।

(छ) ऐलीफेंटा की गुफाओं में गुप्त काल की कला स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। यहाँ शिव की विलक्षण प्रतिमाएँ हैं। ऐलीफेंटा की त्रिमूर्ति, शिव की प्रतिमा, नटराज की प्रतिमा, सदाशिव तथा अर्धनारीश्वर की प्रतिभा इन्हीं गुफाओं के उदाहरण हैं। इसमें शिव की मूर्ति लगभग बीस फुट ऊँची है। अत: ऐलीफेंटा की गुफाओं के मन्दिर परिसर को शिव के निवास के रूप में ही पहचाना जाता है।

3. (क) उदयगिरि की सबसे प्रसिद्ध मूर्ति नृवराह अवतार की है।

(ख) नृवराह की मूर्ति में प्रतिमा का शरीर मानव का है और मुख वारह का है। नथुने में पृथ्वी दिखाई गई है।

(ग) जब हिरणयाक्ष दैत्य पृथ्वी को रसातल में ले गया था तब पृथ्वी का उद्धार नृवराह अवतार द्वारा हुआ था।

(घ) नृवराह की मूर्ति उदयगिरि को आठवीं गुफा में स्थित है।

(ङ) ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गंगा, यमुना, ऋषि-मुनि, नवग्रह अपना हर्ष व्यक्त करते हुए नृवराह को आशीर्वाद दे रहे हैं।

भाषा ज्ञान

1. (क) वनिता (ख) पीड़ा (ग) लंबोदर (घ) खोह

(ङ) शुभ्र (च) हथियार

2. अपवित्र, ह्रास विनाश, सूर्यास्त, अभूतपूर्व, साफ, परोक्ष, अपकर्ष, निम्नतम, अप्राकृतिक।

3. इतिहासकार, साहित्यकार, परंपरावादी, विज्ञानिक, भूगोलाचार्य, सांस्कृतिक।

पाठ 4 - बुद्धि बड़ी या पैसा

लिखित

1. (क) अहंकारी (ख) पुरुष

(ग) सफेद कपड़े में लपेट कर दो ईंटें

2. (क) राजा कहता था कि संसार में धर्म-कर्म, स्त्री-पुत्र, मित्र-सखा सब पैसा ही है।

(ख) रानी पैसे को तुच्छ और बुद्धि को श्रेष्ठ समझती थी।

(ग) राजा ने रानी से पूछा कि दुनिया में बुद्धि बड़ी है या पैसा?

(घ) व्यापार से कमाए धन से रानी ने सेठ के रुपए चुका दिए और बचे पैसों से गरीब दवाखाना, पाठशाला और अनाथालय खुलवा दिए।

(ङ) जब राजा ने देखा रानी के मकान के पास औषधालय, पाठशाला, अनाथालय बने हैं, तो वह सोचने लगा कि रानी को तो मैंने एक भी पैसा नहीं दिया और लाखों की इमारत कैसे बनवा ली। यह देखकर राजा को रानी की बुद्धिमता पर विश्वास हो गया।

(च) जब रानी ने पैसे को तुच्छ और बुद्धि को श्रेष्ठ बताया तो राजा को गुस्सा आ गया और उसने रानी को नगर के बाहर एक मकान में भेज दिया और सारे जेवर उतरवा लिए।

(छ) रानी ने नौकर से दी ईंटें मँगवाईं और सफेद कपड़े में लपेट कर अपने नाम की मोहर लगा दी और धन्नू

सेठ को अपनी धरोहर कह कर दस हजार रुपए मँगा लिए। उन्हीं पैसों से रानी ने व्यापार शुरू किया।

(ज) देशाटन जाते समय एक ठग ने राजा से कहा मैंने एक आँख तुम्हारे पास गिरवी रखी थी, वह लेने आया हूँ। राजा ने बदनामी से बचने के लिए उसे चार हजार रुपए दिए और दूसरे ठग ने इसी प्रकार अपना कान गिरवी रखने की बात कही और राजा से काफी रुपए ठग कर ले गया।

(झ) राजकुमारी द्वारा भेजी गई चिट्ठी में विवाह की शर्तें लिखी थीं और यह भी लिखा था अगर राजा शतरंज में हार गया तो उसे जेल की हवा खानी पड़ेगी।

(ञ) रानी ने दोनों ढंगों से कहा-पहले अपनी दूसरी आँख निकाल कर दे दो, मेरे पास बहुत लोगों की आँखें गिरवी रखी हैं। उससे मिला कर वापस कर दूंगी। इसी प्रकार जब दूसरे ठग ने कान गिरवी रखने की बात कही तो उसे भी यही कहा-अपना दूसरा कान काट कर दो, तभी पहला वापस मिलेगा। यह सुनकर दोनों ठग भाग गए।

भाषा ज्ञान

1. (क) **राजकुमार** को महल में बुलाया गया।
   (ख) **सेठानी** ने नौकर को बुलाया।
   (ग) **घोड़ी** तेज दौड़ती है।
   (घ) जंगल में **शेरनी** अपने बच्चों के साथ बैठी थी।
2. (क) पैसे (ख) पंखे (ग) डिबियाँ (घ) घोड़े
   (ङ) आशाएँ (च) कमरे (छ) सखियाँ (ज) रानियाँ
3. (क) अप (ख) बद (ग) अव (घ) अप
4. (क) सब्जी वाला, लकड़ी वाला (ख) इज्जतदार, पहरेदार
   (ग) भारतीय, पर्वतीय (घ) अहंकार, चित्रकार
   (ङ) रंगीन, प्रवीन (च) (वना)
5. (क) रानी ने कुम्हार से दो ईंटें मंगवाईं।
   (ख) रानी ने गरीबों के लिए पाठशाला, दवाखाना और अनाथालय खुलवाए।
   (ग) राजा ने लज्जित होकर बोला-रानी, तुम धन्य हो।

पाठ 5 - एक कहानी कुछ अनजानी

लिखित

1. (क) मुहम्मद गौरी (ख) अपना प्रभुत्व जमाने के लिए (ग) एक (घ) 379
2. (क) कुतुबमीनार लाल पत्थरों से बनी है।
   (ख) कुतुबुद्दीन एबक के कार्यकाल में पहली मंजिल बनी थी। उसके बाद इल्तुतमिश के कार्यकाल में तीन मंजिल बनी और अंतिम मंजिल का निर्माण सन् 1386 मे फिरोजशाह तुगलक के कार्यकाल में पूरा हुआ।
   (ग) वसुधैव कुटुंबकम का अर्थ है। पूरा विश्व एक परिवार है।
   (घ) यूनेस्को द्वारा कुतुबमीनार को विश्वदाय स्मारक की मान्यता दी गई है।
   (ङ) कुतुबद्दीन एबक का कहना था कि जो दिल्ली में राज करेगा, भारत का राजा वही बनेगा, इसलिए उसने दिल्ली को राजधानी घोषित करते हुए सबसे पहले कुब्बतुल इस्लाम मस्जिद बनवाई।
   (च) कुतुबमीनार की पहली मंजिल कुतुबद्दीन ऐबक के कार्यकाल में बनी। इसके बाद इल्तुमिश के कार्यकाल में तीन मंजिल बनीं। पाँचवीं मंजिल सन् 1386 में फिरोज शाह तुगलक के कार्यकाल में पूरी हुई। इस प्रकार यह दुनिया की सबसे ऊंची मीनार बन गई जो कुतुबमीनार के नाम से जानी गई।
   (छ) जब सभी देशों, धर्मों, वर्गों और समुदायों के लोग प्रतिदिन हजारों की संख्या में मेरे पास आते हैं, तो कुतुब मीनार का सीना गर्व से तन जाता है और इसके परिसर में स्थित लौह स्तंभ को देखकर वे चकित रह जाते हैं।
   (ज) लौह स्तंभ लगभग डेढ़ हजार वर्ष पुराना होते हुए भी आज तक इसमें जंग नहीं लगा।

भाषा ज्ञान

1. (क) सप्ताह (ख) महीना (ग) दशक (घ) सहस्त्राब्दी
   (ङ) पक्ष (च) वर्ष (छ) सहस्त्राब्दी (ज) छमाही
2. (क) नवीन (ख) विदेशी (ग) अविकसित (घ) ध्वंस
   (ङ) अनेक
3. सम्मान, इरादा, पाखंड, मशहूर, महिमा

पाठ 6 - चेतक

लिखित

1. (क) रण के बीच (ख) कोमल थे
   (ग) निर्भीक बना रहता था (घ) दंग रह जाते थे
2. वाग हिली, लेकर सवार, फिर नहीं, तक चेतक
3. (क) लगाम के हलके से हिलने पर ही चेतक अपने स्वामी का हर संकेत समझ जाता था।
   (ख) चेतक बहुत तेज दौड़ता था। आसमान में हवा से बातें करता था। इसलिए उसका संबंध हवा से पाला पड़ने से जोड़ा जाता था।
   (ग) चेतक निडर होकर, ढालों के बीच में जाकर, तेजी से तलवारों में दौड़ता था। पलक झपकते ही उड़ जाता था।
   (घ) एक दिन वह ठहर गया। भयंकर वज्र-सा वह दुश्मन की सेना पर कहर डालने लगा। भाला और धनुष गिरकर घोड़े का पाँव रुक गाया। चेतक के ऐसे रंग देखकर वैरी समाज दंग रह गया।

भाषा ज्ञान

1. (क) अश्व, चेतक (ख) दुश्मन, वैरी (ग) चकित, दंग (घ) थोड़ा, कम
2. (क) अर्थ - बहुत तेज - प्रयोग : चेतक दौड़ते समय हवा से बातें करता था।
   (ख) अर्थ - चकित होना - प्रयोग : चेतक के कारनामे देखकर लोग दाँतों तले अंगुली दबा लेते थे।
   (ग) अर्थ - हराना - प्रयोग : युद्ध में चेतक ने दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिए।
   (घ) अर्थ - प्राणों की बाजी लगाना - प्रयोग : अपने स्वामी के लिए चेतक ने युद्ध में दुश्मनों से लोहा लिया।
3. (क) कायर (ख) शांति (ग) मित्र (घ) निर्बलता
   (ङ) विरक्ति

पाठ 7 - कश्मीरी सेब

लिखित

1. (क) जब आदमी को बेईमानी करने का अवसर मिलता है तो वह बेईमानी करता है।
   (ख) क्योंकि पढ़े-लिखे बाबुओं और कर्मचारियों पर कोई विश्वास नहीं रहा, सब आपको हानि ही पहुँचाने की कोशिश करेंगे।
   (ग) क्योकि तौल में चाहे छटाँक-आध छटाँक कर लें लेकिन उन्हे पाँच की जगह भूल से दस का नोट दे आते जो आपको घबराने की जरूरत नहीं।
2. (क) गाजरों में विटामिन होते हैं। इसलिए उन्हें मेंजों पर स्थान मिलने लगा है।
   (ख) यदि हम एक सेब प्रतिदिन खाएँ तो हमे डॉक्टर के पास जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।
   (ग) बनारस के लँगड़े आम, लखनऊ के दशहरी और बंबई के अल्फाँस की किस्में बताई गई हैं।
   (घ) दुकानदार ने कहा बड़े मजेदार सेब आए हैं। खास कश्मीर के खाकर आपकी तबियत खुश हो जाएगी।
   (ङ) क्योंकि रात में फल खाने का कोई कायदा नहीं होता। फल खाने का समय प्रात:काल ही होता है।
   (च) लेखक आशा करता है कि पाठक बाजार जाकर सावधानी बरते, जागरूकंता अपनाए, तभी अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तुएँ खरीद सकेंगे।

(छ) शिक्षित समाज में विटामिन और प्रोटीन के शब्दों पर विचार करने की प्रवृत्ति हो गई है। क्योंकि अब पता चल चुका है कि किस फल या सब्जी में विटामिन है। या प्रोटीन, जो हमारी सेहत के लिए लाभकारी है।

(ज) लेखक ने प्रात:काल सेब निकाले तो देखा सभी सेब सड़े व गले हुए थे।

(झ) समाज के चारित्रिक पतन के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि बाजार में कुछ भी खरीदते समय सतर्क रहना बहुत जरूरी है।

(ञ) दुकानदार ने भाप लिया था कि लेखक अपनी आँखों से काम लेने वाला नहीं है और न ही इतना चौकस है कि घर से सेब वापस लौटाने आएगा।

(ट) आदमी बेईमानी तभी करता है जब उसे अवसर मिलता है। चाहे वह अपने ढीलेपन से हो या सहज विश्वास से बेईमानी में सहयोग देना है।

(ठ) एक बार लेखक ने मुहर्रम के मेले में एक खोमचे वाले से एक पैसे की रेवड़ियां ली थीं और पैसे की जगह अठन्नी दे आया था।

भाषा ज्ञान

1. (क) श् + इ + क् + ष् + इ + त् + अ
   (ख) ज + ञ् +आ + न् + अ
   (ग) च् + आ + र् + इ + त् + र् + क् + अ
   (घ) श् + र् + अ + म् + इ + क् + अ
2. (क) नर, मानव, पुरुष
   (ख) खुश, हर्ष, प्रफुल्ल
   (ग) भोर, सुबह, सवेरा
   (घ) नजर, दृष्टि
3. (क) निराशा (ख) दुखी (ग) साय:काल (घ) ईमानदार
   (ङ) असुरक्षित (च) असहयोग (छ) दुर्गति (ज) अनावश्यक

पाठ 8 - अभ्यारण्य

लिखित

1. (क) विषम जलवायु (ख)कैलादेवी अभ्यारण्य
   (ग) गोडावण (घ) चित्तौड़गढ़ जिले में (ङ) प्रवासी पक्षी
2. (क) अतीत
   (ख) केवलादेव मंदिर (ग) शरण स्थली
   (घ) रणथंभौर (ङ) चित्तौड़गढ़, सीता माता
   (च) सवाई मानसिंह अभ्यारण्य
3. (क) (1) रणथंभौर अभ्यारण्य बाघों की रक्षा के लिए बनाया गया।
   (2) रणथंभौर अभ्यारण्य प्राचीन काल से पशु-पक्षियों के लिए प्रसिद्ध रहा है।
   (3) रणथंभौर अभ्यारण्य में जोगी महल पर्यटकों का प्रिय स्थान है।
   (ख) (1) सीता माता अभ्यारण्य चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है।
   (2) सीता माता अभ्यारण्य में करमोई और नालेश्वर नामक नदियाँ बहती हैं।
   (3) सीता माता अभ्यारण्य उड़न गिलहरियों के लिए प्रसिद्ध है।
   (ग) (1) भारत का राष्ट्रीय पशु बाघ है।
   (2) राष्ट्रीय पशु भारत के अशोक स्तंभ पर स्थित है।

(3) राष्ट्रीय पशु बाघ को संरक्षित प्रजाति में शामिल किया गया है।

(घ) (1) केवलादेव अभ्यारण्य में क्रेन पक्षी सर्दियाँ बिताने आते हैं।

(2) केवलादेव अभ्यारण्य में अजगरों को देखा जा सकता है।

(3) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान राजस्थान के भरतपुर में स्थित है।

4. (क) अभ्यारण्य उस वन को कहते हैं, जहाँ वन्य जीवों का संरक्षण किया जाता है। तथा वन्य जीव नैसर्गिक वातावरण में, बिना किसी भय के अपना प्राकृतिक जीवन जीते हैं।

(ख) रणथंभौर और अभयारण्य, अभ्यारण्य सरिस्का, अरावली की पहाड़ियों, रामगढ़ विषधारी अभयारण्य में बाघ पाए जाते हैं।

(ग)

ऐतिहासिक महल	मंदिर
रणथभौर महल	केवलादेव मंदिर
सीता माता महल	कैला देवी मंदिर
हवा महल	जैन मंदिर
जिलामुख्यालय	
चौसिगा	

(घ) अभ्यारण्य पक्षियों, जीवों और वनस्पतियों के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। अभ्यारण्य में वन्य जीवों का संरक्षण किया जाता है। क्योंकि वन्यजीव नैसर्गिक वातावरण में बिना किसी भय के अपना प्राकृतिक जीवन जीते हैं।

(ङ) आवासी पक्षी - जो पक्षी अभ्यारण्य में ही रहते हैं, स्थानीय क्षेत्र वाले पक्षी आवासी पक्षी कहलाते हैं। और प्रदेश से आए पक्षी प्रवासी पक्षी कहलाते हैं।

(च) अभ्यारण्य पक्षियों, जीवों और वनस्पतियों के अस्तित्व को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान है। इनमें पक्षी अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हैं।

पाठ 9 - श्रेय

लिखित

1. (क) आँधी पानी में (ख) विनम्रता की (ग) झूठा श्रेय
2. (क) क्योंकि पेड़ बड़ा होते हुए भी कई सालों से आँधी-वर्षा के बाद भी सीधा व सिर ऊँचा किए खड़ा है।

(ख) जब लेखक ने कहा-ऋतुएँ भी बदलती हैं, बिजली भी गिरती है, और तुम हरियाली के रूप को ओढ़कर अपनी जगह खड़े हो। यह सुनकर पेड़ काँप उठा।

(ग) पत्तियों ने चुप्पी तोड़कर सर्र-सर्र की आवाज निकाली।

(घ) किसी ने कहा कि तुम आँधी, तूफान के बावजूद भी सीधे खड़े हो।

(ङ) पेड़ उस व्यक्ति की आवाज सुन कर काँप गया और कहा मुझे झूठा श्रेय मत दो।

(च) जब आँधी तूफान में भी पेड़ का कुछ नहीं बिगड़ता और सिर ऊपर किए अपने स्थान पर स्थिर रहता है। यह देखकर पता चलता है, कि पेड़ अपनी जगह पर अड़ा हुआ है।

(छ) इसका अर्थ है, हर विपत्ति में पेड़ सीधा खड़ा रहता है। और विनम्रता की हरियाली ओढ़े अपनी जगह पर स्थिर है। कभी कोई शिकायत नहीं करता।

(ज) कवि की बात सुनकर पेड़ आने वाली विपदा को भाँप गया।

(झ) पेड़ ने कवि से कहा— मुझे झूठा श्रेय मत दो। मैं कई बार झुका, डालियाँ टूटी, सूख गया। अगर श्रेय देना है तो मिट्टी को दो, जो मेरी जड़ों को संभाल कर रखे है।

(ञ) यदि पेड़ दिया हुआ श्रेय ले लेता तो हम पेड़ को अहंकारी समझते।

भाषा ज्ञान

1. **व्यक्तिवाचक जातिवाचक भाववाचक**

पेड़	ऋतुएँ	मित्रता
आम		हरियाली
सूरज		करुणा
चाँद		विनम्रता
माली		
पत्तियाँ		
गंगा		

2. सच्चा, हरा, क्रोध, पतन, बढ़ता, नीचा
3. (क) पुल्लिंग ख. स्त्रीलिंग ग. स्त्रीलिंग घ. पुल्लिंग ङ. पुल्लिंग च. पुल्लिंग छ. स्त्रीलिंग ज. स्त्रीलिंग ञ. स्त्रीलिंग
4. स्वयं कीजिए
5. (i) खड़े हो (ii) भाँप उठा (iii) उजड़ा (iv) गिरती है
   (v) मिला (vi) फिरती है।
6. (i) गृह, सदन (ii) अंधकार, साया
   (iii) मेहमान (iv) अभिलाषा, आशा
   (v) वन, निर्जन (vi) सरिता, जलधि
7. (क) कर्म, काम (ख) आसमान (ग) बादल, हथौड़ा (घ) चिट्ठी

पाठ 10 - डॉ० चंद्रशेखर वेंकटरमन

लिखित

1. (क) चमक (ख) नोबेल पुरस्कार (ग) पिता के संस्कार (घ) पार्वती देवी
   (ङ) प्राध्यापक के पद पर (च) सन् 1921 में
2. (क) आर्थिक संकट और क्षीणकाय होने के कारण रमन इंग्लैंड नहीं जा सके।
   (ख) सन 1930 में लंदन की रॉयल सोसायटी ने रमन को ह्यूजेज पदक प्रदान किया। इसके बाद स्वीडन अकादमी ने उन्हें विश्व के सर्वोच्च पुरस्कार नोबेल पुरस्कार से अलंकृत किया। सन् 1954 में भारत के प्रथम राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ० राजेंद्र प्रसाद ने देश के सर्वोच्च अलंकार 'भारत रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया। विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण अनुसंधान के लिए उन्हें ये पुरस्कार दिया गया।
   (ग) 21 नवंबर 1970 को भारत की इस महान विभूति का स्वर्गवास हो गया।
   (घ) रमन बहुत प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे। उनकी कुशाग्र बुद्धि के कारण अग्रिम कक्षा के विद्यार्थी भी आश्चर्यचकित रह जाते थे। बारह वर्ष की अल्पायु में उन्होनें ने मैट्रिक परीक्षा पास कर ली थी। उन्हें वेद-शास्त्रों का भी अच्छा ज्ञान था।
3. (क) उत्लगर्भा (ख) प्राध्यापक (ग) प्रतिभाशाली
   (घ) प्रोफेसर ईलियट (ङ) मोटे मोटे, भारतीय विज्ञान परिषद
   (च) 21, 1970, स्वर्गवास
4. (क) उत्लगर्भा (ख) विद्यार्थी थे (ग) उच्च शिक्षा का प्रबंध नही था
   (घ) विवाह भी हो गया (ङ) नीला क्यों है।
5. (क) हाँ (ख) नहीं (ग) हाँ
   (घ) नहीं (ङ हाँ
6. (क) चंद्रशेखर वेंकट रमन के पिता श्री चंद्रशेखर अय्यर, जो महाविद्यालय में भौतिकी के प्राध्यापक थे, अपने पिता की वैज्ञानिक अभिरुचि का रमन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

(ख) सन 1921 में रमन विदेश यात्रा पर गए थे। सागर का पानी देखकर रमन के मन में प्रश्न उठा कि समुद्र का पानी नीला क्यों है। और इस खोज में जुट गए। रमन प्रयोग पर प्रयोग करते रहे। सात वर्ष की सतत् साधना के बाद, सन् 1928 में रमन को सफलतामिली और उनका यह अद्‌भुत अनुसंधान 'रमन प्रभाव' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

(ग) सन 1958 में रूस की सरकार ने शांतिपूर्ण कार्यों के लिए रमन को सोवियत संघ का सर्वोत्तम पुरस्कार 'लेनिन पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस पर रमन ने कहा, ''यह पुरस्कार मुझे इसलिए दिया जा रहा है। क्योंकि मैंने विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण अनुसंधान किए हैं। मेरी सदैव यही अभिलाषा है कि मेरे अनुसंधानों से विश्वभर में शांति तथा मानवता का कल्याण हो।''

(घ) (1) सन 1930 में — ह्यूजेज पदक
(2) सन 1954 में — भारत रत्न
(3) सन 1958 में— लेनिन पुरस्कार

भाषा-ज्ञान

1. (क) धरा, भू, भूमि (ख) संसार, जगत, जग
(ग) बेटा, आत्मज, वत्स (घ) गुरू, मान्य
(ङ) दुख, पीड़ा
2. स्वयं करें।

पाठ 11 - चिट्‌ठी के अक्षर

लिखित

1. (क) सूचनाओं को छाँटकर उन्हें प्रकाशन योग्य बनाना।
(ख) लेखक
(ग) उनका दाहिना हाथ कंधे तक उड़ गया था।
2. (क) लगातार अभ्यास से ही लेख सुन्दर होता है। सुन्दर लेख का अर्थ है— दूर-दूर अक्षर, अलग-अलग अक्षर, साँचे में ढले हुए अक्षर।
(ख) संपादक की सुन्दर लिखावट देखकर लेखक बहुत प्रभावित हुए।
(ग) संपादक ने कहा— दाँए-बाएँ में कुछ फर्क नहीं होता। जो गुण दायँ हाथ में होता है, वही बाएँ हाथ में भी होता है। यह तो व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह किस हाथ से काम करता है।
(घ) सेवा-मुक्त होकर संपादक ने पढ़-लिखकर, एक अखबार प्रकाशित करने का फैसला किया।
(ङ) संपादक महोदय ने चार-पाँच साल तक बाएँ हाथ से लिखने का अभ्यास किया। जब लिखने में वे दक्ष हो गये तो एक अखबार प्रकाशित किया।
(च) इस आशय का अर्थ है कि स्वस्थ चिंतन द्‌वारा विकलांगता की भावना पर विजय पाना संभव है।
(छ) साप्ताहिक अखबार में बीस पेज होते थे। शुरू से अन्त तक गाँव की ही बातें छपी होती थी। सुंदर ढंग से सात दिनों के समाचार छाँट-छाँट कर छापे जाते थे।
(ज) लेखक का नाम सुनते ही महिपाल ने तेजी से आगे बढ़कर उन्हें हृदय से लगा लिया।
(झ) सीमा पर शत्रु के साथ युद्‌ध करते हुए महिपाल सिंह बम फटने के कारण कंधे तक अपना दाहिना हाथ खो बैठे।
(ञ) यह बात महिपाल सिंह ने सिद्‌ध कर दी कि विकलांग होने पर निराश नहीं होना चाहिए। उन्होंने एक लेखक के रूप में यह सिद्‌ध कर दिया कि स्वस्थ चिंतन द्‌वारा विकलांगता की भावना पर विजय पाना संभव है।

भाषा ज्ञान

1. (क) रीतिवाचक (ख) रीतिवाचक (ग) स्थानवाचक (घ) कालवाचक
2. पेंशन, अलमारी
3. (क) मैंने (ख) मैं (ग) मुझे (घ) एक
(ङ) संपादक (च) उन्होंने (छ) वे (ज) सरकार

4. स्वयं कीजिए।

5. (क) भूतकाल (ख) भूतकाल (ख) वर्तमान काल (घ) भूतकाल
   (ङ) वर्तमान काल (च) भविष्य काल (छ) भविष्य काल

पाठ 12 - कोणार्क की आत्मकथा

लिखित

1. (क) सूर्य (ख) पेड़-पौधे (ग) बारह वर्ष
   (घ) स्थापत्य/वास्तुकला

2. (क) वायु (ख) सिंह
   (ग) अपनी विजय पताका फहराने के लिए (घ) गौरवमय इतिहास

3. (क) तीन स्वर्णिम नगरियों, भुवनेश्वर, कोणार्क और पुरी के त्रिकोण में स्थित कोणार्क एक अभूतपूर्व स्मारक है। यह भारत के गौरवमय इतिहास का प्रतीक, कला की उन्नत अवस्था का द्योतक और मानव की सबसे उत्कृष्ट भावना का प्रतीक है। कोणार्क मंदिर सूर्यभगवान को समर्पित है।

   (ख) कोणार्क के सूर्य मंदिर के प्रवेश द्वार पर सिंह की मूर्तियाँ हैं।

   (ग) सूर्य का प्रतीक रथ है। इसका विशाल आकार, सूर्य रथ के रूप में भवन का परिशुद्ध अनुपात, विलक्षण वास्तुकता, भव्य शिल्प और अनूठी संरचना दर्शनीय है।

   (घ) सूर्य का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। सूर्य हमें ऊर्जा, प्रकाश, उष्मा, शक्ति तथा चेतना मिलती है। समय का चक्र सूर्य द्वारा ही संचालित होता है। रात-दिन का निर्माता सूर्य ही है। सूर्य ही दिशा-मान कराता है। पेड़-पौधे सूर्य के प्रकाश द्वारा ही अपना भोजन बनाते है जिससे जीव-जन्तु, मानव सभी जीवित हैं। जल-चक्र, नाइट्रोजन-चक्र भी सूर्य द्वारा ही संचालित होते हैं।

   (ङ) पेड़-पौधे सूर्य के प्रकाश द्वारा ही प्रकाश संश्लेषण द्वारा अपना भोजन बनाते हैं। जल चक्र सूर्य द्वारा ही संचालित होता है।

   (च) कोणार्क का मंदिर सूर्य भगवान को समर्पित है। इसके निर्माण में बारह सौ शिल्पकार कारीगर दिन-रात बारह वर्षों तक लगे रहे। इसे एक विशाल सूर्य रथ के रूप में बनाया गया, जिसे सात विलक्षण घोड़े तेजी से खींच रहे हैं। इसके पहियों की नक्काशी बहुत खूबसूरत है। सूर्य रथ के रूप में भवन का परिशुद्ध अनुपात, विलक्षण वास्तुकला, भव्य शिल्प और अनूठी संरचना सब दर्शनीय है। देवी-देवताओं की भव्य मूर्तियाँ, राजा-महाराजाओं के दरबार के दृश्य, स्वर्ग की अप्सराएँ, संगीतज्ञ, गायक, नर्तक, युद्ध के मैदान के जीवंत चित्र, स्त्री-पुरुषों के भावों को प्रकट करती मूर्तियाँ, पशु-पक्षियों के चित्र इस मंदिर में अंकित हैं। यहाँ सूर्य की तीन मूर्तियाँ इस प्रकार हैं— एक पर प्रात:कालीन प्रकाश, दूसरी पर दोपहर के सूर्य की किरणें तथा तीसरी पर सूर्यास्त की रोशनी पड़ती है।

   (छ) नट मंदिर में सूर्य के प्रति अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए नृत्य, गायन व वादन होता था। नट मंदिर के पास ही भोग मंदिर है, जहाँ भगवान सूर्य का भोग तैयार होता था। समय के प्रहार के बावजूद ये दोनों मंदिर अभी भी विद्यमान हैं।

   (ज) सूर्य मन्दिर में सूर्य भगवान की तीन मूर्तियाँ हैं जो इस प्रकार रखी हैं— एक पर प्रात: कालीन प्रकाश, दूसरी पर दोपहर के सूर्य की किरणें तथा तीसरी पर सूर्यास्त की रोशनी पड़ती है।

   (झ) कोणार्क की मूर्तियों की प्रशंसा में रविन्द्रनाथ टैगोर ने कहा कि इन पत्थरों की भाषा मनुष्य की भाषा को कहीं पीछे छोड़ देती है।

भाषा ज्ञान

1. पट, अजस, मूर्ति, पादप, सजनी, रज
2. निंदा, महत्वहीन, बदसूरत, निकास, विध्वंस, सूर्योदय
3. भग्न + आवेश, सूर्य + अस्त, कोण + आर्क, द्रुत + अगामी, राज + वंश, गंधर्व + अलोक
4. महाकाल, महामंत्री, महात्मा

राज्यकाल, राज्यमंत्री, राज्यसभा
राष्ट्रमंत्री, राष्ट्रीयगान, राष्ट्रपतिभवन
जनसभा, जनता, प्रियजन
समर्थ, अर्थव्यवस्था, अर्थहीन
ज्ञानेश्वर, अज्ञानता, ज्ञानी

पाठ 13 – शाहजहाँपुर का खिरनी बाग

लिखित

1. (क) शाहजहाँपुर

(ख) कौन बिस्मिल बाबू? जो तम्बाकू की दुकान करते हैं। कबाड़िया है। वे (ग) 279 (घ) मुरलीधर
(ङ) मूलवर्ती

2. (क) रोशन सिंह (ख) बिस्मिल द्वार (ग) जननी जन्मभूमि फाँस

(घ) राष्ट्रीय अस्मिता शौर्य (ङ) गेरुआ धोती च. 125 पाँच

3. (क) बिस्मिल बापू एक विश्वप्रसिद्ध क्रांतिकारी थे। उनका जन्म एक ऊबड़-खाबड़ गली के मकान न० 279 में हुआ था।

(ख) पान वाले ने कहा— अच्छा-अच्छा आप अखबार वाले हैं। आगे वाला जो मोड़ है, उस कोलिया में चले जाइए, फिर बाएँ घूम जाइएगा।

(ग) फाँसी की कोठरी में लिखा था— ''मुल्क पर कुरबान हो जाने के आरमां दिल में हैं।''

(घ) नारायन एक सिधुआ आदमी थे। उन्होंने लेखक को बताया- यही सामने बालघर बिस्मिल बाबू का है।

(ङ) मिश्रजी ने कहा, ''हमसे बिस्मिल भैया के पिताजी घरेलू बातें किया करते थे। बिस्मिल भैया की बहन एटा में ब्याही थी। सन 47 में देश की आजादी के बाद उनकी माताजी के पास देश के विभिन्न भागों से मनीऑर्डर आते थे। यह मकान बिस्मिल की बहन से 1200 रुपये में चूड़ीवाले विद्याराम ने खरीदा था। विद्याराम से एक पंजाबी ने और बाद में नारायन ने।

(च) लेखक ने खिरनी बाग में देखा कि काली मंदिर के सामने एक गेट बना हुआ है, जिस पर 'बिस्मिल द्वार, बिस्मिल नगर' लिखा हुआ था।

(छ) लेखक कहता है— देखिए, बिस्मिल की प्रतिमा लगी है। किंतु उसकी दुर्दशा देखी नहीं जाती। कोई सुनने वाला है, किसी को उनकी खोज खबर के बारे में कुछ नहीं पता। कोई और मुल्क होता तो आदर से, सम्मान से पाट दिया जाता। कई लोग वहाँ खड़े थे, जो बिस्मिल के जन्म-स्थान के बारे में जानते तक नहीं थे।

पाठ 14 – प्रभात

लिखित

1. (क) चंदा ने (ख) तेज (ग) प्रकाशवान

2. (क) किरणों की भीड़ में चाँद और तारे खो गए।

(ख) समय की तेज चाल को स्वप्न लोक के व्याकुल पल रोक रहे थे।

(ग) तपती दोपहर में धरती के प्यारे श्रमजीवी काम करने निकल पड़े।

(घ) कवि कामना करता है कि सुबह को जागने वाले प्रत्येक धरती पुत्रों का दिन प्रकाशमय हो!

(ङ) समय को गतिमान इसलिए कहा जाता है क्योंकि समय निरंतर चलता रहता है। और समय के साथ सभी प्राकृतिक वस्तुओं में भी परिवर्तन होता रहता है।

(च) कवि कहता है कि जो स्वप्न देख रहे हैं उन्हें संबोधित करते हुए कहता है कि अपनी धरती का माथा चूम कर गरम सुबह तेज तपती हुई दुपहर में धरती के प्यारे श्रमजीवी उसे विकसित करने के लिए निकल पड़ते हैं।

(छ) क्योंकि स्वप्न लोक के व्याकुल पल जो अभी फैलकर दिखाई दे रहे हैं, सुबह होते ही जीवन [illegible] गतिमान चाल के बीच नष्ट हो जाते हैं।

(ज) (i) 'जागे जन जन' का तात्पर्य है कि जो जन स्वप्न देख रहे हैं, उनका दिन का प्रत्येक पल प्रकाशमय हो जो धरती पुत्र मेहनत कर रहे हैं, उन्हें सफलता प्राप्त हो।

भाषा ज्ञान

1. (क) गिन-गिन (ख) शीतल, अशोक (ग) जन-जन (घ) झण-झण
2. (क) (i) व्यक्तिवाचक (ii) भाववाचक (iii) व्यक्तिवाचक (iv) जातिवाचक
   (v) भाववाचक (vi) व्यक्तिवाचक (vii) व्यक्तिवाचक (viii) व्यक्तिवाचक
   (ख) (i) मुस्कुराहट (ii) घबराहट (iii) पिसाई
   (iv) पढ़ाई (v) सिलाई (vi) चढ़ाई
3. (क) शाम (ख) गर्त (ग) गरमी
   (घ) पराया (ङ) चुस्त (च) आकाश
4. (क) क्षणभंगुर (ख) श्रमजीवी (ग) अविकल
   (घ) गतिवान (ङ) ज्योतिर्मय

पाठ 15 - धरती का स्वर्ग

लिखित

1. (क) झेलम नदी बहती है।
   (ख) श्री शंकराचार्य पहाड़ी है।
   (ग) पांडव वंश के राजाओं का बनाया हुआ है।
2. (क) स्वर्ग (ख) अशोक ने (ग) श्रीनगर
   (घ) श्री शंकराचार्य पहाड़ी (ङ) कश्मीरी, उर्दू
3. (क) कन्याकुमारी के सागर से जो लहरें उठती है। वह बहुत खूबसूरत है। और हमें पुन: देखने के लिए आकृषित करती हैं।
   (ख) कश्मीर में जो हवा बहती है। उसमें इतनी शीतलता होती है, कि हमारे शरीर में चुभन पैदा करती है।
   (ग) कश्मीर की मिट्टी में प्यार और मुहब्बत की महक है। यही मिठास कश्मीर के सेबों में भरपूर है।
4. (क) कन्याकुमारी के सागर से तरंगे और सागर उठते झाग देखकर लेखक के मन में कश्मीर देखने की इच्छा हुई।
   (ख) ललितादित्य का सम्राज्य बहुत समृदधशाली था। वे साहित्यकार और कला प्रेमी थे।
   (ग) बारह घंटे लंबी यात्रा की बात सुनकर लेखक घबरा गया, जब उसने सुना कि एक ही चालक बारह घंटे तक बस चलाएगा। एक तरफ ऊँचे पहाड़ों से भारी पत्थरों के लुढ़ककर गिरने की संभावना, दूसरी तरफ जरा-सा फिसलने पर पाताल में बहती चिनाव की तीव्र धारा में गिर जाने का भय।
   (घ) लेखक ने रास्ते में कठोर प्रकृति से संघर्ष, समझौता और प्रेम करके कितने मामूली लोग दुर्गम, ऊँचे पर्वतीय प्रदेश में भी कृषक जीवन बिताते हैं। रास्ते के बीच में छोटे-छोटे कस्बे आते हैं। दुकानों की कतारें, छोटी-छोटी पाठशालाएँ, होटल और सिनेमाघर देखे।
   (ङ) जवाहर सुरंग से गुजरते समय लेखक बहुत पुलकित हुआ। इंजीनियरों की अद्‌भुत प्रतिभा, अदम्य साहस ने इस दुर्गम पर्वत में विशाल सुरंग बनाकर, कश्मीर और भारत का रास्ता पूरे वर्ष चलने लायक बना दिया।
   (च) श्रीनगर पहुँचकर लेखक ने अपने को धन्य माना। वर्षों की अभिलाषा उसकी सफल हो गई। बरफ और केसर के नगर में कदम रखने पर लेखक भगवान को धन्यवाद देने लगा।
   (छ) पहले तो डल झील को देखकर लेखक कहने लगा— कोच्चि की विशाल झील के सामने यह कुछ नहीं है। लेकिन पहाड़, बरफ, झील की नौका-यात्रा, हाउस बोट, अनेक प्रकार के आनंद एक साथ, एक ही जगह पर देखने को मिलते हैं। डल झील उसका मुख्य केन्द्र है।
   (ज) केरल में जन्मे जगदगुरू शंकराचार्य जी को उत्तर भारतीय सीमा पर इस गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित देखकर, लेखक का मन गर्व का अनुभव कर रहा था।

भाषा ज्ञान

2. (क) संतुष्ट (ख) गाथाएँ (ग) बंडल
3. दु + अर्गम, ज्योति् + अमर्य, हिम + आलय
   अन् + आवश्यक, मन् + ओहर, प + वन
   शंकर + अचार्य, ललित + आदित्य, प्रत् + यक्ष
4. स्वयं कीजिए।

पाठ 16 - झाँसी की रानी

लिखित

1. (क) झाँसी की रानी (ख) शर्बत (ग) घोड़ा (घ) डायर
2. (क) जब रघुनाथ सिंह ने कहा, मैं अब नहीं बचूँगा— यह सुनकर मुंदरबाई उदास हो गई।
   (ख) सूर्य की किरणों ने रानी के सुंदर मुख को प्रदीप्त किया।
   (ग) उत्तर और पश्चिम दिशाओं की ओर तात्या और राव साहब के मोर्चे थे।
   (घ) वर्दी के कट जाने पर हुजरों ने देखा कि तोपखाने का अफसर गोरेरंग की एक सुंदर युवती थी और उसके होठों पर मुस्कुराहट थी।
   (ङ) इस पाठ में अंग्रेजों के साथ झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के अंतिम युद्ध का वर्णन किया गया है।
   (च) रानी ने आदेश दिया कि मेरी देह को अंग्रेज न छू पाएं।
   (छ) रानी को घोड़े पर बहुत भरोसा था। उसने कहा कि यदि मैं मर भी गई तो दामोदर को सुरक्षित दक्षिण पहुँचा देगा।

भाषा ज्ञान

1. (क) घोड़े से उतर कर रघुनाथ सिंह ने अपना साफा फाड़ा।
   (ख) सावधानी से घोड़े पर इन्हें बिठा कर गंगादास की कुटी पर ले जाओ।
   (ग) मुझे ग्वालियरी पर संदेह था।
   (घ) रानी को यकीन था कि उसके मरने के बाद ये दामोदर को दक्षिण पहुँचा देगा।
2. (क) सुरज्ञ + इत (ख) ग्वाल + इयरी
   (ग) अरुण + इमा (घ) मुस्करा + आहट
   (ङ) विध + अर्मी (च) अंत + इम

पाठ 17 - जीवन का झरना

लिखित

1. (क) झरने से (ख) मस्ती को (ग) सुख-दुख (घ) मृत्यु का
2. (क) जीवन एक झरने के समान है जिसका कार्य पानी है। यह सुख-दुख के रास्ते पर चलता है।
   (ख) कवि ने जीवन को झरने के समतुल्य माना है। जीवन का कार्य भी गति है। और झरने का भी कार्य गति है।
   (ग) जीवन के समान झरना भी सुख-दुख के रास्ते पर चलता है। यह रास्ते में आने वाली बाधाओं से लड़कर आगे बढ़ता है।
   (घ) निर्झर में गति ही जीवन है। जिस दिन यह गति रुक जाएगी, उस दिन मानव की मृत्यु हो जाएगी।
   (ङ) यह मार्ग में आने वाली बाधाओं से लड़कर वनों में पेड़ों से टकराकर बढ़ते हुए चट्टानों पर चढ़ता है।
   (च) झरने का कार्य निरंतर आगे बढ़ने का है। पीछे मुड़कर नहीं देखता। सिर्फ एक ही धुन है— आगे ही बढ़ते जाना है।
   (छ) यह बाधाओं से लड़कर वनों में पेड़ों से टकराकर चट्टानों पर चढ़ता है। और नौजवानों की तरह मदमाता है। इसकी लहरें बार-बार उठती हैं। जब यौवनावस्था आगे बढ़ती है, झरने की तरह ही बढ़ती है। झरने ने उसका चलना ही जीवन बताया है।

भाषा ज्ञान

1. (क) दुर्दिन (ख) शार्षक (ग) समतल
   (घ) आशीर्वाद (ङ) मस्ती (च) निर्झर
2. (क) मृत्यु (ख) रात (ग) विपरीत
   (घ) आगे (ङ) दुख (च) अच्छा समय

पाठ 18 - सोना

लिखित

1. (क) लेखिका के परिचित की पौत्री
   (ख) कुमकुम का टीका (ग) कुत्ता (घ) गंगा में
2. (क) सोना के नित्य के कार्यक्रम में पिल्लो के बीच लेट जाना सम्मिलित हो गया।
   (ख) क्योंकि उसे इनसे अपने बच्चों का डर था।
   (ग) क्योंकि फ्लोरा सोना के व्यवहार और अहिंसक प्रकृति से परिचित हो गई थी।
3. (क) सोना का रंग सुनहरा, रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था। छोटा-सा मुँह और पानीदार आँखें, लंबे कान, पतली सुडौल टाँगें थीं।
   (ख) सोना लेखिका के सामने, आगे-पीछे छलाँग लगाती कभी उसके सिर के ऊपर से निकल जाती। भीतर आने पर वह लेखिका के पैरों से अपना शरीर रगड़ने लगती। साड़ी के छोर को मुँह में भर लेती और कभी-कभी पीछे से चोटी चबा डालती। डाँटने पर वह चकित आँखों से ऐसे देखती कि हँसी आ जाती थी।
   (ग) सोना के छात्रावास में पहुँचते ही एक नया काम जुड़ जाता था। कोई छात्रा उसके माथे पर कुमकुम का बड़ा-सा टीका लगा देती। कोई पूजा के बताशे खिलाती थी।
   (घ) यात्रा से वापस आने पर हेमंत, बसंत लेखिका के चारों ओर परिक्रमा करके हर्ष-ध्वनियों से उसका स्वागत करने लगे।
   (ङ) एक दिन न जाने स्तब्धता की स्थिति में बंधन की सीमा भूलकर वह बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुँह के बल धरती पर आ गिरी। इस प्रकार किसी निर्जन वन में जन्मी पली सोना की करुण कथा का अंत हो गया।

भाषा ज्ञान

1. घना जंगल, बड़े कान, शैतान बच्चे, बड़ी-बड़ी आँखें, दूसरी दुकान, निर्बल जीव
2. (क) अनिश्चित (ख) सुनहरा (ग) नवजात शिशु
   (घ) छात्रावास (ङ) अनिच्छा
3. शैशव + अवस्था, विद्या + आलय
   रो + ओमंथन, ग्रीष्म + अवकाश
   छात्र + आवास, सद + आनंद

पाठ 19 - अतिथि सेवा

लिखित

1. (क) प्रजा के (ख) राज्य में अकाल के कारण (ग) नियम था
   (घ) तीव्र वर्षा के (ङ) व्यर्थ
2. (क) राजा (ख) आकाल (ग) आशीर्वाद (घ) गद्‌गद्
   (ङ) जल, शेष (च) आप, प्रजा (छ) अतिथि धर्म
3. (क) प्रजा ने राजा से कहा
   (ख) व्यक्ति ने राजा रन्तिदेव से कहा

(ग) भूख से पीड़ित एक व्यक्ति ने राजा से कहा

(घ) याचक ने राजा से कहा।

4. (क) राजा रन्तिदेव सदैव अपनी प्रजा के हित का ध्यान रखते थे। इसलिए प्रजा उन्हें देवतातुल्य समझती थी।

(ख) प्रजा ने कहा, ''महाराज, जीवन बचाने के लिए दूसरे स्थान पर जाने के अतिरिक्त अब कोई चारा नहीं है।

(ग) प्रजा को दुखी और भूखे देखकर रन्तिदेव और उसके परिवार दूसरे स्थान पर जाने की सोचने लगा।

(घ) दीन-हीन कृशकाय व्यक्ति, भिक्षुक, रोग और भूख से पीड़ित एक व्यक्ति याचक ने रन्तिदेव के सामने भोजन की याचना की।

(ङ) याचकों ने कहा, ''आप जैसे राजा जहाँ हों, वहाँ अकाल नहीं रह सकता। जो स्वयं विपत्ति में होकर भी श्रद्धा के साथ दुखियों की सहायता करते हैं।

(च) जब तीव्र वर्षा ने नदियों और तालाबों को पुन: भर दिया, राजा रन्तिदेव अपने परिवार और प्रजा के साथ अपने राज्य में लौट आए। कुछ ही समय बाद खेतों में फसलें लहलहाने लगीं और समृद्धि के द्वार खुल गए।

भाषा ज्ञान

1. समृद्धि, निरोगी, सम, असफलता, राजा, असीमित, पड़ताल, अधर्म
2. हीनता, विषमता, देवता, प्राचीनता शालीनता, अमरता, अज्ञानता, महानता
3. (क) प्रजा इन्हें देवतुल्य समझती है।

(ख) वे परिस्थितियों के सामने विवश हैं।

(ग) भिक्षुक को भी कई दिनों से भोजन नहीं मिला है।

(घ) वर्षा ने नदियों और तालाबों को भर दिया है।

4. अर्थ - विपत्ति आना

वाक्य - आकाल के कारण गाँव में त्राही-त्राही मच गई।

अर्थ - न संभाल पाना

वाक्य - राजा गाँव में अकाल पर काबू न पा सके और गाँव छोड़ कर चले गए।

अर्थ - कोई उपाय न सूझना

वाक्य - अब रन्तिदेव के पास गाँव छोड़ने के अलावा कोई चारा नहीं था।

अर्थ - प्रार्थना करना

वाक्य - गाँव-वासियों ने राजा से भोजन की याचना की।

शिक्षक सहायता किताब
हिंदी कक्षा-7

पाठ 1 - बरसात की आती हवा

लिखित

1. (क) बरसाती हवा

(ख) यह शीतल और सुखदायी होती है।

(ग) धरती और आकाश दोनों से अठखेलियाँ करती है।

2. (क) चंद्रमा के पास से कहकर कवि आकाश की बरसाती हवा की विशेषता बता रहे हैं।

(ख) बरसात गरमी से तपती धरती को सुख देती है।

(ग) बरसाती हवा पेड़ों की हर लताओं से खेलती है।

(घ) ये हवाएँ या तो चंद्रमा के पास से, बादलों की साँसों से आती हैं।

(ङ) ये हवाएँ चारों ओर खुशियाँ बिखेरती हैं। इसके आने से हर प्राणी, पशु-पक्षी, पेड़-पोधों में आनन्द की भावना भर जाती है।

(च) बरसात की हवाएँ चंद्रमा या बादलों के पास से आती प्रतीत होती हैं।

(छ) पर्वत शिखरों और ढाल में ये हवाएँ खेलती हैं।

(ज) हरे-भरे पौधों के साथ बरसाती हवाओं का व्यवहार मंद-मंद मुस्कुराती हवा जैसा होता है।

(झ) ये हवाएँ शून्य से निकल कर नई खुशी के साथ पेड़-पौधों से लिपट जाती हैं।

(ञ) बरसात की हवाओं के चलने से सम्पूर्ण पृथ्वी आनन्दित हो जाती है। यह पृथ्वी पर चारों ओर खुशियाँ बिखेरती है।

भाषा ज्ञान

1. (क) द्विज — दूसरा, अगला

   (ख) ताल — तलाब, तबले की ताल

   (ग) डाल — पेड़ की डाल, डालना

   (घ) प्रकृति — स्वभाव, वातावरण

2. (क) छात्र - विद्यार्थी
   छत्र - छाया

   (ख) उदर - पेट
   उदार - निर्मल

   (ग) अवधि - समय
   अवधी - भाषा

   (घ) चपल - चंचल
   चपला - दुश्चरित्रा

   (ङ) नीयत - स्वभाव
   नियत - तरीका

   (च) अनल - आग
   अनिल - नाम

   (छ) आचार - आचरण
   आचार - अचार, खाने वाला

   (ज) असमान - भिन्न
   असामान - कुछ नहीं

3. आकाश - आसमान, अम्बर
   पानी - जल, पेय
   धरती - धरा, भू
   चन्द्रमा - शशि, चाँद
   हवा - वायु, वेग
   बादल - घन, मेघ
   शरीर - तन, देह
   वृक्ष - पेड़, तरू

पाठ 2- छोटा जादूगर

लिखित

1. (क) लेखक ने छोटे जादूगर को, सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजाए हुए देखा।
   (ख) घर जाने की जल्दी में छोटे जादूगर का स्वर लड़खड़ा रहा था।
   (ग) भीड़ में लेखक को देखकर छोटा जादूगर क्षण भर के लिए मूर्तिमान हो गया।
   (घ)' क्यों न आता' कहने से अपमान का भाव झलक रहा था।
2. (क) लड़के ने लेखक को बताया कि तमाशा दिखाने आया हूँ, कुछ पैसे कमा कर जाऊँगा तो माँ को पथ्य दूँगा।
   (ख) लेखक ने लड़के को बारह टिकट खरीद कर दिए।
   (ग) छोटे जादूगर ने हिंडोले से लेखक को खरीद कर दिए।
   (घ) लेखक की पत्नी द्वारा दिए गए रुपयों से जादूगर ने बारह खिलौने खरीदे– जैसे; भालू, बिल्ली, बंदर, गुड़िया, गुड्डा, लट्टू, ताश के पत्ते, गले की सूत की डोरी आदि।
   (ङ) लता-कुंज कलकत्ता के सुंदर बॉटेनिकल उद्यान में झील के किनारे घने वृक्षों से लदी हुई है।
   (च) छोटे जादूगर के मुँह पर गंभीरता के साथ धैर्य की रेखा थी। उसकी वाणी में कहीं रुकावट नहीं थी। लेखक को लगा इससे अच्छा निशाना तो मैं ही लगा सकता हूँ।
   (छ) क्योंकि उस बालक के पिता आजादी की लड़ाई में जेल में थे और माँ घर पर बहुत बीमार थी। इसलिए वह अपने परिवार की जिम्मेदारी उठा रहा था।
   (ज) बॉटेनिकल उद्यान में खिलौनों का अभिनय देखकर जैसे भालू मनाने लगा, बिल्ली रुठने लगी, बंदर घुड़क रहा है। लड़के की बातों से खेल होता देख सभी हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए।

भाषा ज्ञान

1. (क) संसार — जग, जगत
   मनुष्य — नर, मानव
   कमल — पुष्प, सुमन
   पानी — जल, नीर
   माँ — माता, जन्नी
   आकाश — नभ, आसमान
   संध्या — शाम, सायं
   उद्यान — बगीचा, बाग
   (ख) (i) कामचोर (ii) अकल्पनीय
   (iii) बेनाम (iv) अन्यमनस्क
   (v) मेहनती (vi) जादूगर
2. (i) पुनरुक्त शब्द-युग्म — चलते-चलते
   (ii) विलोम शब्द-युग्म — काम न काज
   (iii) परसर्ग शब्द-युग्म — ज्यादा-से-ज्यादा
   (iv) सजातीय शब्द-युग्म — खाते-पीते
   (v) सार्थक-निरर्थक शब्द युग्म — पीना-वीना
   (vi) निरर्थक शब्द-युग्म — सटर-पटर
3.

	विग्रह	**समास का नाम**
(क)	भगवान का घर	— द्विगु समास
(ख)	सात दिनों का समूह	— द्विगु समास
(ग)	कमल के समान चरण	— कर्मधारय समास
(घ)	पाँच का समान	— बहुव्रीह समास
(ङ)	नीला है गगन	— बहुव्रीह समास
(च)	चार माह का समूह	— द्विगु समास

4. (क) तुम्हारा पालन-पोषण कौन करता है?

(ख) हमने खाना खा लिया है।

(ग) एक कप गर्म चाय पी लो।

(घ) हवाई अड्डे पर प्रधानमंत्री पहुँच गए हैं।

(ङ) मेले में बच्चों ने मिठाई खाई।

(च) उसे किताब खरीदनी है।

पाठ 3 - अगर नाक न होती

लिखित

1. (क) छन्ने और झाड़ू का (ख) नकसुरा

   (ग) सारी हेकड़ी

2. (क) यदि नाक न होती तो आदमी में घमंड न होता। एक दूसरे की अच्छाई या बुराई देखकर नाक न सिकोड़ता या अपने बड़े होने पर नाक ऊँची होने का घमंड न दिखाता।

   (ख) नाक बचाने के लिए आदमी खाकी वरदीधारियों, आयकर अधिकाारियों या दलालों की पत्रम पुष्पम से पूजा करता है।

   (ग) नाक तब बुरी लगती है जब बह किसी शुभ कार्य के वक्त अनायास छींक मार देती है।

   (घ) रोते समय आँखों में आँसू आते हैं, तो नाक उसका साथ निभाती है। नाक पोंछने से रोने का सारा मजा किरकिरा हो जाता है। जैसे करुण रस में बरबस भी वीभत्स आ टपकता है।

   (ङ) यदि आँख आ जाए या चली जाए तो ऐसी स्थिति मे चश्मा लगाया जाता है।

   (च) नाक के कारण दो महान ग्रंथ रामायण और महाभारत की रचना हुई थी।

   (छ) नाक नीची होने के डर से लोगों का जीना मुहाल हो जाता है। वह ऊँची नाक करने के चक्कर में कर्जा ले लेते हैं। झूठा दिखावा करते हैं।

   (ज) नाक के बहुत से फायदे हैं। उच्छ्वास और नि:श्वास का कार्य मुँह से किया जा सकता है। पर प्राणों का आधार श्वास है। नाक हीटर का काम करती है। वातावरण में व्याप्त प्रदूषण को फेफड़ों तक जाने से नाक ही रोकती है।

   (झ) मध्यकालीन काव्य में नायिकाओं की नाक के लिए बहुत सी उपमाएँ दी गई हैं। नाक को चंपे की कली, तिल के सुगंधित फूल से निर्मित और तलवार की धार से बढ़कर बताया गया हैं। नायिका की नाक की उपमा तोते की चोंच से पढ़ाते हैं।

   (ञ) नाक हमें पर्यावरण में व्याप्त प्रदूषण को फेफड़ों तक जाने से रोकती है, जिससे हमारे फेफड़े सुरक्षित रहते हैं।

   (ट) नाक के कारण ही सीता का हरण और रावण का मरण हुआ। यदि सूर्पनखा की नाक न कटती तो रामायण की रचना कैसे होती? महाभारत का आधार भी द्रौपदी की नाक ही थी, जो अत्यंत खतरनाक सिद्ध हुई।

भाषा ज्ञान

1. (क) तत्सम शब्द - छोछक, सुमुखी
   तद्भव शब्द - औकात, करुण
   देशज शब्द - भात, ब्याह, छोछक
   विदेशी शब्द - नाक

2. (क) अनुकूल - प्रतिकूल
   आधार - निराधार
   दुर्भाग्य - सौभाग्य
   आंतरिक - बाहरी
   असली - नकली
   सुगंध - दुर्गंध

खुशबू – बदबू

दूर – पास

2. (ख) घमंड – शान, अकड़

हाथ – हस्थ, भुजा

आँख – नयन, नेत्र

अवगुण – बुरा आचरण

(ग) हार – पतन, गले का हार

अंग – शारीरिक भुजा, भाग

कर – काम, करना

वर – दुल्हा, स्वयंवर

3. (क) मुँह में पानी आना (ख) चिराग तले अँधेरा

(ग) हेकड़ी भूल जाना (घ) लज्जित होना

4. (क) अधूरा ज्ञान हानिकारक होता है। (ख) जबरदस्ती गले पड़ना

(ग) गलती पर पछताना (घ) मूर्खों में अज्ञानी राजा

पाठ 4 - समर्पण

लिखित

1. (क) कवि देश की धरती को अपना गान, प्राण सपने, आयु का प्रत्येक पल समर्पित करना चाहता है।

(ख) कवि देश से क्षमा माँग रहे हैं, क्योंकि वह अपना सब कुछ समर्पित करना चाहते हैं।

(ग) कवि अपने दाँय हाथ में तलवार और बाएँ हाथ में ध्वज थमाने को कह रहे हैं।

(घ) धरती – धरा, भू

देश – जग, जगत

(ङ) समर्पण की

2. (क) कवि देश की धरती से निवेदन कराता है कि जब वह थाल में अपना मस्तक सजा कर लाए तो उसका समर्पण स्वीकार किया जाए।

(ख) कवि देश की धरती की धूल अपने माथे पर लगाना चाहते हैं।

(ग) कवि देश की धरती का आशीर्वाद चाहते हैं।

(घ) कवि हाथ में तलवार और कमर पर ढाल बाँधकर अपना सब कुछ देश की धरती को समर्पित करने जा रहे हैं।

(ङ) कवि चाहते हैं कि मातृभूमि के लिए तन, मन, गान, प्राण–जीवन, स्वप्न और आयु के प्रत्येक क्षण समर्पित करना चाहते हैं।

(च) क्योंकि वह मातृभूमि के लिए और भी बहुत कुछ करना चाहते हैं।

(छ) कवि थाल में सजाकर देश की धरती को अपना मस्तक भेंट करना चाहते हैं।

(ज) क्योंकि वह मातृभूमि के लिए अपना सब कुछ समर्पित करना चाहते हैं।

(झ) 'नाड़ी का तृण–तृण समर्पित' से कवि का तात्पर्य है कि फूल, उपवन और घोंसले का प्रत्येक तिनका तुम्हें अर्पित है।

(ञ) कवि देश के लिए अपना सब कुछ समर्पित करना चाहते हैं। मातृभूमि के लिए अपना तन, मन, गान, प्राण, जीवन, सपने और आयु का प्रत्येक पल वह समर्पित करना चाहते हैं।

भाषा ज्ञान

1. (ख) अ + इ + न् + क् + अ + च् + अ + न्
   (ग) त् + अ + ल् + अ + व + अ + र् + अ
   (घ) ध् + अ + र् + अ + त् + ई
   (ङ) ब + आ + न् + ध् + अ
2. (क) मृत्यु (ख) इनकार (ग) अम्बर
   (घ) मुक्त (ङ) देश (च) लेना
3. (क) मस्तक, नत (ख) घन, मेघ (ग) पृथ्वी, धरा
   (घ) फूल, पुष्प (ङ) कर्ज, उधार (च) दरिद्र, तुच्छ
4. (क) तुच्छ (ख) असीमित (ग) शरणागत
   (घ) व्यवहाारिक (ङ) विश्वसनीय

पाठ 5 - स्वास्थ्य ही जीवन है।

लिखित

1. (क) जंक फूड खाने से शरीर को पौष्टिक तत्व नहीं मिल पाते हैं।
   (ख) संतुलित भोजन में रोटी, दाल के अतिरिक्त हरी सब्जी, फल और दूध का होना आवश्यक है।
   (ग) शाकाहारी लोगों को दूध-दही अधिक मात्रा में खाना चाहिए।
   (घ) नहीं; मूली, गाजर, पालक जैसी सस्ती सब्जियाँ खाकर भी अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त किया जा सकता है।
   (ङ) दूध अपने आप में पूर्ण भोजन है। शरीर की वृद्धि के लिए बच्चों का दूध पीना बहुत आवश्यक है।
2. (क) अहमद के पिताजी ने अहमद से कहा कि बाजार की गन्दी मिठाई मत खाया करो, ये सेहत के लिए हानिकारक होती है।
   (ख) अगर अहमद बीमार न होता तो कक्षा की तरफ से कबड्डी का मैच खेलता।
   (ग) यदि हमारा हर क्षण उल्लास से भरा, रात में गहरी नींद आती हो, सुबह उठने पर मन उमंगों से भरा हो, और स्वच्छता, संतुलित आहार, व्यायाम का ध्यान रखें तो हम स्वस्थ रह सकते हैं।
   (घ) गंदे कपड़ों में तरह-तरह की बीमारियों के कीटाणु जमा हो सकते हैं। दूसरों के उतरे कपड़े पहनने से दूसरे के रोग तुम्हें लग सकते हैं।
   (ङ) सूर्य के प्रकाश से विटामिन 'डी' प्राप्त होता है। जो स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक है।
   (च) व्यायाम करने से मांसपेशियाँ बढ़ती हैं, मजबूत होती हैं। अंगों में शक्ति और स्फूर्ति आती है। दंड-बैठक, कुश्ती आदि देश के प्राचीन व्यायाम हैं।
   (छ) स्वस्थ जीवन में हमारा हर क्षण उल्लास से भरा होता है, हम सदा हँसमुख रहते हैं। रात में गहरी नींद आती है। और सुबह उठने पर मन उमंगों से भरा रहता है।
   (ज) अस्वस्थ व्यक्ति के मन में उदासी रहती है। स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। मन अनेक प्रकार की चिन्ताओं से घिरा रहता है।
   (झ) प्रतिदिन स्नान करने से हमारा शरीर साफ व रोग-मुक्त रहता है।
   (ञ) जिस घर में प्रतिदिन नियम से सफाई होती है, तो मकड़ियाँ जाले नहीं बना पातीं। फर्श की धूल में तरह-तरह के कीटाणु पलते हैं, इसलिए प्रतिदिन झाड़ू-पोंछा करने से घर साफ रहेगा और घर में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति भी स्वस्थ रहेगा।
   (ट) शुद्ध हवा और धूप हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक है। घर के रोशनदार व खिड़की खुली रखने से दूषित हवा बाहर जाती है और शुद्ध हवा अन्दर आती है। यदि दूषित हवा कमरे में रहेगी तो उसी में

हम साँस लेते रहेंगे, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है। सर्दियों में धूप का सेवन करने से हमें विटामिन 'डी' प्राप्त होता है; जो स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक है।

(ठ) 'दुग्ध भोजनम अमृतम' अर्थात दूध का भोजन अमृत के समान होता है। शरीर की वृद्धि के लिए बच्चों का दूध पीना अति आवश्यक होता है। दूध अपने आप में पूर्ण भोजन है। दूध में सभी तत्व मिले होते हैं।

भाषा ज्ञान

1. (क) (i) विद्या + आलय
   (ii) शाक + आहारी
   (iii) स्वर्ग + आसन
   (iv) विद्या + अर्थी
   (v) बाल्या + अवस्था
   (vi) अत्य + अधिक
   (vii) स्व + अच्छ
   (viii) सदा + ऐव

   (ख) (i) खोंमचे + वाले (ii) तंदुरुस्त + ई
   (iii) महत्व + पूर्ण (iv) रोशन + दान
   (v) शुद्ध + ता (vi) समझ + दार
   (vii) पनिहार + अ (viii) उपयोग + ई

   (ग) (i) सं + भावना (ii) प्र + तिदिन
   (iii) यथा + संभव (iv) व्य + आयाम
   (v) अ + स्पष्ट (vi) ला + इलाज
   (vii) दर + असल (viii) दुर + दशा
2. स्वयं कीजिए।
3. (i) आशीर्वाद (ii) दुर्गति
   (iii) ब्राह्मण (iv) धार्मिक
   (v) राष्ट्रीय (vi) उपर्युक्त
   (vii) श्रीमान (viii) ड्रम
5. स्वयं कीजिए।

पाठ 6 - प्रेम में परमेश्वर

लिखित

1. (क) आठ वर्षों से
   (ख) परमात्मा की निष्काम भक्ति करने से
   (ग) अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए
2. (क) मूरत की स्त्री तीन साल का बालक छोड़ कर परलोक सिधार गई थी, इसलिए मूरत अपने बच्चे का पालन-पोषण स्वयं करने लगा।
   (ख) मूरत ने अपने मित्र से कहा— पुत्र मर गया, सर्वनाश हो गया। अब विनती करता हूँ कि मुझे जल्दी इस संसार से उठा ले।
   (ग) मित्र ने समझाया कि ईश्वर की इच्छा के आगे किसी का बस नहीं होता। परमात्मा की निष्काम भक्ति करने से अंत:करण शुद्ध होता है।
   (घ) सब काम परमेश्वर को अर्पण करके जीवन व्यतीत करने से परमानंद प्राप्त होगा।
   (ङ) ईश्वर ने मूरत को लालू के रूप में, स्त्री और बच्चे रूप में और सेब बेचने वाले के रूप में दर्शन दिए।
   (च) मूरत अपना समय व्यर्थ नहीं खोता था। काम करता था या रामायण पढ़ता था, गीता पढ़ता था और उसके उपदेशों पर विचार करता था।

(छ) जब मूरत का तीन साल का बच्चा स्वर्ग सिधार गया, तो उसके दु:ख की कोई सीमा न रही और उसका विश्वास हिल गया।

(ज) मूरत का बच्चा मर जाने पर मूरत का विश्वास हिल गया। वह परमात्मा की निंदा करने लगा। और कहता था कि परमेश्वर बड़ा निर्दयी और अन्यायी है। इसलिए उसने मन्दिर जाना छोड़ दिया।

(झ) मूरत के मित्र ने भगवान के प्रति मूरत के मन में विश्वास जगाया। उसने कहा— परमात्मा की निष्कास भक्ति से ही अंत:करण शुद्ध होता है। उसने मूरत का चित्त स्थिर करने का उपाय बताया, कहा— गीता-भक्त मालादि ग्रंथों का श्रवण, पठन-मनन किया करो, इससे चित्त को शान्ति मिलेगी।

(ञ) मूरत ने अपना मन काम में लगा लिया और महाभारत, रामायण पढ़ कर, उसके उपदेशों पर विचार करने लगा। ऐसा करने से उसका जीवन सुधर गया। वह सदा परमात्मा में लीन रहकर आनंदपूर्वक जीवन बिताने लगा।

(ट) गरीब स्त्री ने कहा— मैं एक सिपाही की स्त्री हूँ, आठ महीने से कर्मचारियों ने पति को कहीं भेज दिया है। गर्भवती होने पर एक ही जगह काम करती थी। बच्चा होने पर घर से निकाल दिया, क्योंकि दो जीवों को अन्न देना पड़ता। तीन माह से घूम रही हूँ। जो कुछ था, सब बेच कर खा गई। साहूकारिन के पास जा रही हूँ, शायद नौकरी पर रख लें।

(ठ) मूरत ने सेब बेचने वाली को समझाया कि बदला और दंड तो मनुष्यों का स्वभाव है, परमात्मा का नहीं। वह दयालु है। यदि इस बालक को सेब चुराने का दंड मिलना उचित है, तो हमें हमारे अनंत पापों का दंड भी मिलना चाहिए।

भाषा ज्ञान

1. (क) तीर्थयात्रा (ख) दर्शन (ग) काम-धंधे
   (घ) दर्शन (ङ) उसे
2. (क) विस्मयवाचक (ख) विधानवाचक (ग) प्रश्नवाचक
   (घ) निषेधवाचक (ङ) संदेहवाचक (च) निषेधवाचक
   (छ) संदेहवाचक (ज) इच्छावाचक

पाठ 7 - हींग वाला

लिखित

1. (क) ढेर सारी हींग रखी है।
   (ख) सावित्री के द्वारा हींग खरीदने के कारण
   (ग) सावित्री के छोटे बच्चे ने।
2. (क) हींग बेचने वाला खान आंटी के घर के बाहर मौलसिरी के नीचे बने हुए चबूतरे पर बैठ गया।
   (ख) खान ने सावित्री से हींग लेने का आग्रह किया।
   (ग) खान ने कहा— हेरा हींग है। एक नंबर की हींग है।
   (घ) छोटे लड़के ने पैंतीस पैसे लेने की जिद की।
   (ङ) बच्चे काली का जलूस देखने जाने की जिद कर रहे थे।
   (च) इस कथन के द्वारा लड़की अपने भाइयों से यह कहना चाह रही थी कि माँ, खान ही उनका बड़ा बेटा है।
   (छ) सावित्री ने कहा— पहले खाना खा लो, फिर मैं रुपया तुड़वाकर तीनों को पैंतीस-पैंतीस पैसे दूँगी।
   (ज) होली में दंगे की खबर सुनकर सावित्री इसलिए चिन्तित थी, क्योंकि उसके बच्चे काली का जलूस देखने बाहर गए हुए थे।
   (झ) बच्चों के घर न लौटने पर सावित्री परेशान हो गई। उसे अपने पर क्रोध आ रहा था कि उसने बच्चे क्यों भेजे! पागल सी गई और बच्चों की मनोकामना के लिए उसने सभी देवी-देवता मना डाले और उदास होकर फूट-फूट कर रोने लगी।
   (ञ) सावित्री ने जलूस में न जाने के लिए बच्चों को पैसों का, खिलौनों का सिनेमा का प्रलोभन दिया, लेकिन बच्चों ने इनकार कर दिया। वह इसलिए नहीं जाने देना चाहती थी क्योंकि पिछले वर्ष होली पर दंगा हो चुका था।

भाषा ज्ञान

1. (क) खानसामा (ख) इन्तजार (ग) इज्जत
   (घ) समाप्त (ङ) माँ (च) इन्तजाम
2. (क) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा
   (ग) जातिवाचक संज्ञा (घ) भाववाचक संज्ञा
   (ङ) व्यक्तिवाचक संज्ञा (च) समुदायवाचक संज्ञा
3. (क) घबरा जाना (ख) मुसीबत आना
   (ग) डर जाना
4. (क) विकारी (ख) अविकारी
   (ग) विकारी (घ) अविकारी
   (ङ) अविकारी (च) विकारी
   (छ) अविकारी (ज) विकारी

पाठ 8 - चलना हमारा काम है

लिखित

1. (क) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है जब तक मैं अपनी मंजिल नहीं पा लेता, तब तक मुझे चैन नहीं आएगा। चलते रहना और काम करते रहना ही मेरा प्रमुख लक्ष्य है।
   (ख) हमने किसी से बात कर ली या किसी की बातें सुन लीं तो हमारे मन का बोझ हल्का हो गया। कोई रास्ते मे मिला तो रास्ता आसानी से कट गया। रास्ते का परिचय देते हुए वह स्वयं का नाम ही राही बताते हैं।
2. (क) मनुष्य का निरन्तर चलते रहना ही उसका सर्वोपरि धर्म है।
   (ख) साथी के मिल जाने से कवि का रास्ता आसानी से कट गया।
   (ग) कवि ने विश्व-प्रवाह के लिए स्थानवाचक विशेषण प्रयुक्त किया है।
   (घ) किसको नहीं बहना पड़ा का अर्थ है— हमारी तरह सुख-दुख सहना नहीं पड़ा।
   (ङ) जब तक न मंजिल पा सकूँ, तब तक मुझे न विराम है।
   (च) जीवन में निरन्तर परिश्रम करने से ही लक्ष्य की प्राप्ति होती है।
   (छ) रास्ते का परिचय देते हुए कवि अपने को राही बताता है।
   (ज) इससे अभिप्राय यह है कि वह जीवन बिल्कुल अधूरा है। कभी कोई कुछ पाता है, कभी कोई आशा-निराशा से घिरा जीवन। कभी हँसता है। कभी रोता है।
   (झ) कवि कहता है— जीवन में सुख-दुख अटकलें आती रहती हैं। इसी का नाम तो जीवन है। इसके लिए मैं विधाता को क्यों दोष दूँ।
   (ञ) निरन्तर चलते रहने या परिश्रम करते रहने से ही हम अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। बिना मेहनत के हम कुछ भी हासिल नहीं कर सकते। चलते रहना ही हमारा सुखद एहसास और परम कर्तव्य है।

भाषा ज्ञान

1. (क) कोई (ख) कुछ (ग) कोई
   (घ) किसी (ङ) कोई (च) किसी (छ) कुछ
2. (क) नहीं (ख) न (ग) मत
   (घ) नहीं (ङ) मत (च) मत
3. (क) बँट गया, कट गया (ख) खोता कमी, रोता कमी

पाठ 9 - ऐसे थे बालकृष्ण भट्ट

लिखित

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓
   (घ) ✓ (ङ) ✓ (च) ✗ (छ) ✗

2. (क) पंडित बालकृष्ण भट्ट का जन्म 3 जून 1844 को प्रयाग के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था।

   (ख) स्कूल में दसवीं तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद भट्ट जी ने घर पर ही संस्कृत का अध्ययन किया। संस्कृत के अतिरिक्त उन्हें हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान हो गया।

   (ग) प्रारम्भ में भट्ट जी प्रयाग में संस्कृत के अध्यापक रहे। लेकिन वहाँ मन न लगने के कारण भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से प्रभावित होकर हिन्दी साहित्य सेवा का व्रत लिया और आजीवन हिंदी साहित्य की उन्नति और सेवा में लगे रहे।

   (घ) उनके निबंध संग्रह— 'साहित्य सुमन' और 'भट्ट निबंधावली' हैं।

   (ङ) भट्ट जी के अनूदित नाटकयं दमयंति, स्वयंवर, बाल विवाह, चंद्रसेन, रेल का टिकट, खेल, वेणी संहार, मृच्छकटिक, पदमावती आदि प्रमुख हैं।

   (च) भट्टजी के प्रमुख नाटक— चंद्रसेन, स्वयंवर, पदमावती, बाल विवाह हैं। और उपन्यासों में— नूतन ब्रह्मचारी और सौ अजान एक सुजान प्रमुख हैं।

   (छ) बालकृष्ण के पिता का नाम प० वेणी प्रसाद था। उनकी माता अपने पति की अपेक्षा अधिक पढ़ी— लिखी थीं। उनकी शिक्षा का प्रभाव बालकृष्ण पर बहुत पड़ा। स्कूल में दसवीं की शिक्षा प्राप्त करके भट्ट जी ने घर पर ही संस्कृत का अध्ययन किया। संस्कृत के अतिरिक्त उन्हें हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी भाषाओं का अच्छा ज्ञान हो गया।

   (ज) बालकृष्ण भट्ट के बहुचर्चित निबंध 'साहित्य सुमन' और 'भट्ट निबंधावली' हैं। उनके निबंधों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये सुरुचि संपन्न होने के साथ-साथ कल्पना की ऊँची उड़ान भी भरते हैं। और शिष्ट हास्य व्यंग्य से भरपूर हैं।

   (झ) भट्ट जी ने हिन्दी के प्रचार के लिए संवत् 1993 में प्रयाग में 'हिंदी वर्द्धनी' की स्थापना की। वे बत्तीस वर्षो तक इसके संपादक रहे। 'हिन्दी-प्रदीप' के अतिरिक्त उन्होंने दो-तीन अन्य पत्रिकाओं का संपादन भी किया। उन्होंने अपनी रचनाओं में हिन्दी का प्रयोग किया। वे हिंदी की परिधि का विस्तार करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने भाषा का प्रयोग विषय एवं प्रसंग के अनुसार ही किया।

   (ञ) भट्ट जी ने अपनी रचनाओं में शुद्ध हिंदी का प्रयोग किया है। उनकी भाषा में पूर्वीपन की झलक दिखाई देती है। जैसे— समझा-बुझा के स्थान पर समझाए-बुझाए लिखा है। उनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ उर्दू, अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी भाषा के प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी किया गया है। जिससे भाषा जीवंत और विचार चित्ताकर्षक हो गई है।

   (ट) भट्ट जी की शैली के कई रूप उनके निबंध, नाटकों और उपन्यासों में दिखाई देते हैं। शैली ही लेखक के व्यक्तित्व की परिचायक होती है। भट्ट जी की शैली के निम्न रूप हैं— विचारात्मक शैला का प्रयोग व्यावहारिक तथा सामाजिक विषयों के निबंधों में किया गया है। भावनात्मक शैली का प्रयोग साहित्यिक निबंधों में किया गया है। व्यंग्यात्मक शैली में हास्य और व्यंग्य की प्रधानता है। भावनात्मक शैली का प्रयोग, जो साहित्यिक निबंधों में किया गया है। इसी को भट्ट जी प्रतिनिधि शैली कहा जा सकता है।

   (ठ) भारतेंदु काल के निबंध लेखकों में भट्ट जी का स्थान सर्वोच्च माना जाता है। उन्होंने अपने हिंदी गद्य साहित्य को उस समय समृद्ध किया, जिस समय खड़ी बोली हिंदी अपना रास्ता बना रही थी।

भाषा ज्ञान

1. (क) चीफ + मिनिस्टर = चीफ मिनिस्टर
   (ख) वाइस + प्रिंसिपल = वाइस प्रिंसिपल
   (ग) हेड + मास्टर = हेडमास्टर
   (घ) डिप्टी + रजिस्टार = डिप्टी रजिस्टार
   (ङ) जनरल + मेजर = जनरल मेजर
   (च) हर + पाल = हरपाल
   (छ) दर + वाजा = दरवाजा
   (ज) कम + जोर = कमजोर
   (झ) गैर + कानूनी = गैरकानूनी
   (ञ) ना + टक = नाटक

2. (क) अनुकरणीय (ख) प्रथम
   (ग) अतिथि सत्कार (घ) जो बाद में अधिकारी बने
   (ङ) मेहनती
3. (क) मोहन का पुत्र मात्र चार वर्ष का है।
   (ख) मई तक परीक्षा समाप्त हो जाएगी।
   (ग) मैं आज ही बाजार जाऊँगी।
   (घ) आज श्याम भी मेरे घर आएगा।
   (ङ) चोर तो भाग गया।
4. (क) साहित्य के लिए सेवा — संप्रदान तत्पुरुष समास
   (ख) सुरुचि द्वारा संपन्न — करण तत्पुरुष समास
   (ग) यथा में शक्ति — अधिकरण तत्पुरुष समास
   (घ) घर का द्वार — संबंध तत्पुरुष समास
   (ङ) तीन रास्ते हों जिसके — द्विगु समास
5. (क) निबंध + आवली (ख) भाव + आत्मक
   (ग) पुस्तक + आलय (घ) पत्र + आचार
   (ङ) सर्व + उच्च

पाठ 10 - माँ : जीवन संचालिका

लिखित

1. (क) राम प्रसाद का जन्म 11 जून 1897 को शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था।
   (ख) रामप्रसाद के माता, पिता भगवान श्रीराम के परम भक्त थे।
   (ग) राम को पढ़ने से अधिक खेलना प्रिय था।
   (घ) राम प्रसाद के पिता क्रोधी स्वभाव के थे और माँ प्रेम पूर्वक व्यवहार करती थी।
   (ङ) द्वंद्व समास
2. (क) बिस्मिल ने हिंदी के ज्ञान के साथ उर्दू सीखी। इसके बाद वे अंग्रेजी पढ़ने के लिए मिशन स्कूल भी गए।
   (ख) बिस्मिल जी ने आत्मकथा के खंड एक में बचपन का वर्णन किया है। जिन्हें बचपन में 'उ' लिखना नहीं आता था। जिसके लिए उन्हें पिताजी की मार सहनी पड़ी और उन्हें उर्दू सीखने के लिए स्कूल भेजा गया।
   (ग) बिस्मिल अपनी माताजी से बहुत प्रभावित थे। उनकी माता जी अपने प्रोत्साहन और सद्व्यवहार से सदैव पुत्र के जीवन को दिशा दिखाती रहीं। बिस्मिल ने जेल से अपनी माता को एक अत्यंत हृदयस्पर्शी पत्र भी लिखा था।
   (घ) बिस्मिल के द्वारा रचित 'अमेरिका की स्वतंत्रता का इतिहास' नामक पुस्तक छपते ही जब्त कर गई। धीरे-2 अपने कारनामों के कारण विदेशी सरकार की आँखों की किरकिरी बन गए। 'काकोरी' कांड के बाद तो गिरफ्तारी से हर समय उनका लुका-छिपी वाला खेल चलने लगा। अंततः 26 सितंबर, 1925 की रात को वे गिरफ्तार कर लिए गए।
   (ङ) बिस्मिल ने अपनी माँ से भारत माता की सेवा करने का आशीर्वाद माँगा। उसने कहा— आप मुझे ये आशीर्वाद दो कि अंतिम समय में भी मेरा हृदय विचलित न हो। मेरी एक ही तृष्णा रह गई कि मैं आपके चरणों की सेवा न कर सका।
   (च) बिस्मिल अपनी माता से बहुत प्रभावित थे। उनकी माँ ने सदैव उन्हें जीवन की दिशा दिखाई। इस पर उन्होंने जेल से एक पत्र में लिखा कि माँ, मुझे आपका ऋण उतारने का अवसर नहीं मिला। इस जन्म में क्या, अगले कई जन्मों में भी आपसे उऋण नहीं हो पाऊँगा। जिस प्रेम और दृढ़ता से आपने मेरा तुच्छ जीवन सुधारा है।
   (छ) राम प्रसाद बिस्मिल जी की आर्य समाज में धीरे-धीरे रुचि बढ़ी। वे प्रायः प्रवचन, व्याख्यान आदि सुनते और साधु-संन्यासियों की पूरी निष्ठा से सेवा करते थे।
   (ज) बिस्मिल जी की गिरफ्तारी के बाद अभियोग और मुकदमा चलाने का नाटक खूब चला, जिससे बिस्मिल ने

स्वयं अपने केस की ऐसी पैरवी की, कि जज साहब देखते रह गए। और उन्हें, पहले से ही तय किया हुआ, खतरनाक अपराधी ठहराया गया और अंत में 19 सितंबर 1927 को गोरखपुर जिले में फाँसी की सजा सुना दी।

(झ) माँ को सामने पाकर बिस्मिल जी की आँखें इसलिए नम हो गई, क्योंकि वे सोच रहे थे कि माँ मेरी फाँसी की खबर सुन कर सहन नहीं कर पाएगी, लेकिन वह रो भी न पाए थे कि उनकी माँ बोली– ''मैं प्रसन्न हूँ कि मेरे पुत्र ने शूरवीरों की भाँति अपने प्राण न्योछावर किए।''

भाषा ज्ञान

1. (क) (i) सम + अर्पित (ii) सं + पूर्ण
(iii) सा + नंद (iv) सं + लग्न
(v) स + पूत (vi) दु + र्दशा
(vii) उ + ऋण (viii) प्रत + एक

(ख) (i) शिक्षित + अ (ii) स्वार्थ + रहित
(iii) प्रसन्न + ता (iv) हृदय + हीन
(v) जन्म + दाता (vi) चमकी + ला
(vii) बुद्धि + मान (viii) शर्म + नाक

(ग) (i) पूर्ण विराम (।) (ii) अपूर्ण विराम (;)
(iii) अल्प विराम (,) (iv) अर्ध विराम (;)
(v) विस्मयादिबोधक (!) (vi) प्रश्नवाचक विराम (?)
(vii) योजक विराम (-) (viii) उद्धरण चिन्ह (“ ”)
(ix) कोष्ठक ( ) (x) निर्देशक चिन्ह (—)
(xi) विवरण (—) (xii) हंसपद चिह्न (-)
(xiii) लाघव चिन्ह (०)

(क) वे प्राय: प्रवचन, व्याख्यान आदि सुनते थे।

(ख) माँ, मेरे मन में एक ही तृष्णा शेष रह गई है।

(ग) मैं जो भी हूँ, या होने की आशा करता हूँ, उसका श्रेय मेरी माँ को जाता है।

(घ) राम, लक्ष्मण, सीता वन को गए।

(ङ) मेरी शिक्षा, मेरी आत्मिक उन्नति, धर्म में रुचि सब आप ही की कृपा है।

2. विद्या + आलय = विद्यालय

सुर + ईश = सुरेश

सदा + एव = सदैव

सु + आगत = स्वागत

कवि + इंद्र = कवेन्द्र

राजा + ऋषि = राजर्षि

अति + अधिक = अत्यधिक

पो + अन = पान

- प्रोत्साह = प्र + उत्साह

यथावसर = यथा + अवसर

शुभारंभ = शुभ + आरंभ

मुनीश्वर = मुन + ईश्वर

लघुर्मि = लघु + उर्मि

युगावतार = युग + अवतार

स्वर्णाक्षर = स्वर्ण + अक्षर

आत्मार्पण = आत्म + अर्पण

ज्ञानेंद्रिय = ज्ञान + इन्द्र

3. त्रिगह समास

(क) स्वार्थ से रहित = अपादान तत्पुरुष

(ख) माँ के समान भारत = संबंध तत्पुरुष

(ग) समय का आभाव = संबंध तत्पुरुष

(घ) तीन रंग का ध्वज = द्विगु समास

(ड़) देश की रक्षा = संप्रदान तत्पुरुष

4. (क) खून खौलना = गुस्सा आना

(ख) दिल पसीजना = दया दिखाना

(ग) पापड़ बेलना = मेहनत करना

(घ) हाथ-पाँव फूल जाना = घबरा जाना

(ङ) हाथ न आना = अफसोस करना

पाठ 11 - चंडीगढ़ से शिमला तक

लिखित

1. (क) चंडीगढ़ (ख) उनतालिस किमी

(ग) एक गाँव का नाम (घ) धारामंडल सरोवर

(ङ) नासिद्दीन

(च) सन 1868 ई० में

2. (क) शिवालिका (ख) सन 1254 ई०, अवशेषो

(ग) कालका, शिमला (घ) चोटियाँ, नैसर्गिक, स्वप्न लोक

(ङ) शमशद्दीन अल्तमश (च) उषा भगवान, श्रीकृष्ण

3. (क) फतेहगढ़ गुरू गोविंद सिंह के ननिहाल का बलिदान स्थल हैं।

(ख) देश के विभाजन के बाद चंडीगढ़ का अपना अनूठा आकर्षण है। यहाँ की साफ सुथरी सड़कें, करीने से बने भव्य भवन, हजारों की संख्या में अशोक, अमलतास, कचनार, गुलमुहर की हरियाली को ओढ़े वृक्ष यात्रियों के हृदय पर सुन्दर छाप अंकित करते हैं। यहाँ पर निर्मित सेक्रेटिएट हाईकोर्ट व अनेक सरकारी भवन आधुनिक वास्तुकला के शानदार उदाहरण हैं। नगर से कुछ ही दूरी पर सुखना झील एक सुन्दर पिकनिक स्पॉट है। चड़ीगढ़ के प्रत्येक भाग से शिवालिका-पहाड़ियाँ अपनी संपूर्ण शोभा लिए दिखाई पड़ती हैं।

(ग) महाभारत के समय पंजोर का नाम विराट नगर था। महाराज बसंत यहाँ के शासक थे। पांडवों का अज्ञातवास यहीं था। पांडवों के निवास की स्मृति को यादगार बनाये रखने के लिए इस स्थान का नाम पंचपुर पड़ा। जो कुछ समय बाद पंजौर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। पंजौर और उसके निकटवर्ती क्षेत्र में हमारी प्राचीन संस्कृति व कला के अनेक उदाहरण मिलते हैं। पंजौर प्राचीन सरोवरों-कुंडों की नगरी है।

(घ) जब महावीर हनुमान लक्ष्मण जी के लिए हिमालय संजीवनी लेकर लौट रहे थे तो कुछ देर के लिए उन्होंने इस स्थान पर विश्राम किया था। समुद्रतल से लगभग 8,000 फुट की ऊँचाई पर स्थित यह स्थान सैलानियों के रोमानी मन को व्याकुल किए बिना नहीं रहता। पर्वतों से ढंकी चोटियां और सब ओर बिखरी सौंदर्य की अपार राशि हमें स्वप्नलोक-सी लगती है जिनको एकांत प्रिय है, और प्रकृति के उपासक हैं, उनके लिए यह उपयुक्त स्थान है।

(ङ) चंडीगढ़ में सैलानियों का आकर्षण केंद्र है— रॉक गार्डन। लोग इसे राजगार्डन कहकर बुलाते हैं। यह चंडीगढ़ के सचिवालय को जाने वाले रास्ते पर स्थित है। यहाँ बेकार का कूड़ा-कचरा समझी जाने वाली वस्तुओं

का बहुत सुंदर ढंग से उपयोग किया गया है। जानवरों की खालों तथा बेकार पड़े संगीत के यंत्रों को इस प्रकार सजा रखा गया है कि वे वस्तुएँ बहुत सुन्दर लगती हैं। यह उद्यान पुरानेपन व नयेपन एवं प्राकृतिक व कृत्रिम के मिश्रण का एक सुंदर उदाहरण है। इस पाषाण उद्यान के निर्माता श्री नेकराम का झोंपड़ीनुमा निवास-स्थान इसी में है।

(च) सन् 1868 ई० में गवर्नर जनरल सर जॉन लॉरेंस के काल में शिमला बना। यहाँ गोल्फ के शौकीनों के लिए एक विशाल मैदान है। शिमला नगर से थोड़ी दूरी पर घने जंगलों में चैल नामक दर्शनीय स्थान है। आखेट के शौकीन यहाँ आते रहते हैं। यहाँ से पर्वतों के नीचे प्रवाहित सतलुज नदी का दृश्य बहुत सुखद प्रतीत होता है। शिमला की गोलमेज कॉन्फ्रेन्स का अपना महत्व है। सन 1971 ई० में भारत-पाक युद्ध के बाद स्वर्गीय श्रीमति इंदिरा गांधी तथा भुट्टो के मध्य 'शिमला समझौता' भी यहीं संपन्न हुआ था।

(छ) सन् 1254 ई० में दिल्ली के शासक नासिरुद्दीन महमूद ने इस क्षेत्र पर आक्रमण करके प्राचीन अवशेषों को क्षति पहुँचाई थी।

(ब) 1815-16 ई० मे अंग्रेजों ने गोरखा युद्ध के बाद, शिमला को स्वास्थ्यप्रद स्थान समझ कर, इसे नेपाल के महाराजा से ले लिया।

(स) सन् 1864 ई० में गवर्नर जनरल सर जॉन लॉरेंस के काल में शिमला भारत की ग्रीष्म-कालीन राजधानी बना।

(द) सन् 1971 ई भारत-पाक युद्ध के बाद स्वर्गीय श्रीमती गांधी तथा भुट्टो के मध्य शिमला समझौता यहीं हुआ था।

(य) सन 1764 ई०

(र) सन 1675 ई

4. (क) शिमला में महँगे व सस्ते होटल मिल जाते हैं, यह कथन सत्य है। लोग अपने बजट के अनुसार होटल व धर्मशाला ले सकते हैं।

(ख) घुड सवारी के शौकीनों के लिए घोड़े किराए पर मिल जाते है। जिन्हें चलने में असुविधा है। या घुड़सवारी का लुत्फ उठाना चाहते हैं वे किराए पर घोड़े ले सकते हैं।

(ग) शिमला में क्रिकेट, टेनिस खेलने की सुन्दर व्यवस्था है। विभिन्न विद्यालयों में पढ़ रहे छात्रो का मैच यहाँ होता रहता है।

भाषा ज्ञान

1. (क) ध्वस्त (ख) समझौता
   (ग) अनेकता (घ) राजधानी
   (ङ) नवीन (च) श्रोता
2. (क) यहाँ खूब रौनक रहती है।
   (ख) कालका लौट आए
   (ग) नीचे उतरते जा रहे थे
3. (क) काल वाचक क्रिया (गत वर्षों से)
   (ख) स्थान वाचक क्रिया (यहाँ के शासक)
   (ग) स्थान वाचक क्रिया (उपर्युक्त स्थान)
4.

	शब्द	**प्रकार**
(क)	ऊपर	स्थानवाचक
(ख)	नहीं	परिमाण वाचक
(ग)	अवश्य	रीतिवाचक
(घ)	कभी	काल वाचक
(ङ)	कल	कालवाचक
(च)	उतना	परिमाण वाचक
(छ)	किसलिए	स्थान वाचक
(ज)	हाँ जी	रीतिवाचक

पाठ 12 - शहर से गाँव की ओर

लिखित

1. (क) चंचल (ख) परदेश जाने का
   (ग) लग्नशील है (घ)उसके सपने ऊँचे थे
2. (क) मोहन के घर लौटने पर दीया जोर से चिल्लाई-मोहन आ गया।
   (ख) मोहन नौ वर्षों बाद शहर से गाँव वापस आया था।
   (ग) शहर से वापस आने पर मोहन को अपने मित्र प्रताप की याद सता रही थी, इसलिए उसने माँ से उसके बारे में पूछा।
   (घ) मोहन प्रताप के बगीचे में पहुँचा। उसने देखा, प्रताप परिश्रम और लग्न से पेड़ों के थाले बना रहा था। दोनों मित्र एक-दूसरे को देखकर लिपट गए और एक पेड़ के नीचे बैठ गए और बातें करने लगे।
   (ङ) मोहन शहर में एक सेठ के घर में घरेलू नौकर का काम करता था।
   (च) मोहन को शहरी चकाचौंध बहुत आ रही थी और उसके सपने भी ऊँचे थे, इसलिए वह एक दिन स्कूल से ही दिल्ली चला गया।
   (छ) चारों ओर लगे आड़ू, नाशपाती, खुबामी और सेब के पेड़ देख कर ही ऐसा लग रहा था कि प्रताप ने बहुत मेहनत की है।
   (ज) अपनी कहानी बता कर मोहन इसलिए झेंप गया क्योंकि प्रताप उससे ज्यादा पढ़ गया था और मोहन स्वयं किसी के घर नौकरी कर रहा था।
   (झ) प्रताप को मुरादाबाद में नौकरी मिल गई थी, लेकिन वह अपना गाँव और माता-पिता को छोड़ कर नहीं जाना चाहता था। यही सोच कर उसने आत्ममंथन किया और गाँव न छोड़ने का निर्णय लिया।
   (ञ) प्रताप की बातें सुनकर मोहन ने यह निर्णय लिया कि परदेश की अपमान भरी चुपड़ी रोटी से घर की सूखी रोटी उत्तम है। और अब उसने गाँव में रहकर ही मेहनत और लगन से अपने टूटे सपने को पूरा करने में लग गया।

भाषा ज्ञान

1. अंग्रेजी — मशीन, स्कूल, गैराज
   उर्दू — बाजार, गुम, गुजर बसर, इंसान, दृष्टि, स्वतंत्र, नजर
   संस्कृत — उत्तीर्ण, आत्ममंथन, प्रथम, हृदय
2.

एकवचन		बहुवचन	एकवचन		बहुवचन
माता	-	माताएँ,	मशीन	-	मशीनें
रात	-	रातें,	लता	-	लताएँ
बहिन	-	बहिनें,	याद	-	यादें
कविता	-	कविताएँ,	सभा	-	सभाएँ
सेवा	-	सेवाएँ,	हवा	-	हवाएँ

3. (क) सर्वनाम - यह
   सर्वनामिक - सुन्दर
   (ख) सर्वनाम - वह
   सर्वनामिक - मिठाई
   (ग) सर्वनाम - ये
   सर्वनामिक - मैच
4.

मुहावरा		अर्थ
सपना पूरा होना	-	इच्छा पूर्ण होना
साया उठ जाना	-	मर जाना
नजर झुकाना	-	शर्म आना

दिन दूनी रात चौगुनी – तरक्की होना

5. **विलोम** **शब्द**

शुद्ध – अशुद्ध

प्रशंसा – निंदा

उत्तीर्ण – अनुत्तीर्ण

मित्र – शत्रु

उन्नति – अवनति

प्राकृतिक – काल्पनिक

स्वच्छ – अस्वच्छ

गुलामी – स्वाभिमान

ऋण – दान

पौष्टिक – अपौष्टिक

पाठ 13 - मैं हूँ चार्ली चैपलिन

लिखित

1. (क) अदालत में उनके पक्ष में फैसला नहीं हुआ था।
   (ख) चार्ली गाने लगा।
   (ग) अभिनेता बनने का।
   (घ) महिला का
   (ङ) महत्वाकांक्षी
2. (क) चार्ली चैपलिन
   (ख) धीरे-धीरे चार्ली की ख्याति बढ़ने लगी और अमेरिका तक पहुँच गई।
   (ग) चार्ली का अभिनय दर्शकों को बहुत पसंद आने लगा, इसलिए फिल्म निर्माता अपनी फिल्मों के दाम बढ़ाने लगे।
3. **चार्ली चैपलिन** - चार्ली चैपलिन बचपन से ही हँसमुख प्रवृति का था और दूसरों की नकल करने का कौशल उन्हें बहुत ऊँचाइयों पर ले गया। जब भी वह मंच पर पहुँचता तो दर्शकों की तालियों से उसका स्वागत होता था। धीरे-धीरे अमेरिका में भी उसकी ख्याति बढ़ने लगी।

   चार्ली की माँ - चार्ली की माँ एक थियेटर में काम करती थी। वह चार्ली और उसके भाई को बहुत प्यार करती थी। धीरे-धीरे माँ पागल हो गई और उसे पागलखाने भर्ती करना पड़ा।

   चार्ली के पिता - चार्ली के पिता नेपोलियन की तरह दिखते थे। उनकी आवाज रौबीली थी। पर वे पीते बहुत थे।
4. (क) चार्ली की माँ एक थिएटर में काम करती थी। वह गाना गाती थी।
   (ख) क्योंकि चार्ली के पिता उनके लालन-पालन का खर्च नहीं दे रहे थे।
   (ग) जब थिएटर में गाना गाते समय माँ का स्वर लड़खड़ाने लगा तो मैनेजर ने हाथ पकड़ कर चार्ली को मंच पर खड़ा कर दिया।
   (घ) जीवन-यापन के लिए चार्ली ने गाने गाए, नृत्य किया, नकलें भी खूब उतारीं। उसने अखबार बेचे, प्रेस में छपाई की, खिलौने बनाए, डाक्टरों के यहाँ भी काम किया। लेकिन अभिनेता का लक्ष्य नहीं भूला।
   (ङ) अमेरिकन विदूषक में चार्ली ने खूब चौड़े पाँयचे वाली पतलून पहनी। सिर पर डबीं हैट पहना। हाथ में बेंत पकड़ी। पैरों में बड़े-बड़े जूते पहनें और नाक व हाठों के बीच में एक छोटी-सी मूँछ लगा ली।
   (च) पहले दर्शक वेलडन को बहुत पसन्द करते थे। लेकिन चार्ली के आने के बाद दर्शकों का ध्यान उसकी तरफ से हट गया, इसलिए वेलडन चार्ली से चिढ़ता था।
   (छ) चार्ली का जन्म 16 अप्रैल 1889 को लंदन के ईस्ट लेन में हुआ था। उसके पिता ने माँ को छोड़ दिया था। पाँच वर्ष की आयु से उसने मंच पर खड़े होना सीख लिया था।

(ज) जब माँ ने पालन-पोषण के खर्च के लिए पिता जी पर मुकदमा किया और अदालत में माँ के पक्ष में फैसला नहीं हो सका तो माँ थिएटर में चार्ली को अपने साथे ले जाती थी। और मंच पर गाना गाती थी।

(झ) जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए आत्म-विश्वास बहुत जरूरी है। यह हम चार्ली के जीवन की रूप-रेखा से सीख सकते हैं। चार्ली ने मात्र पाँच वर्ष की आयु में गाना शुरू किया तो दर्शकों ने उसे बहुत पसन्द किया। चार्ली चैपलिन बचपन से ही हँसमुख प्रवृति का था। यही कौशल उसे ऊँचाइयों तक ले गया।

(ञ) जब चार्ली चैपलिन इंग्लैंड में था तो एक अमेरिकी कंपनी का मैनेजर इंग्लैड आया, जिसे विदूषक की तलाश थी। वह चार्ली की कला से इतना प्रभावित हुआ कि चार्ली को अपने साथ अमेरिका ले गया।

भाषा ज्ञान

2. (क) स्वादिष्ट (ख) विदूषक
   (ग) लोकप्रिय (घ) वैज्ञानिक
   (ङ) अभिनेता (च) मैनेजर
   (छ) संगीतज्ञ (ज) महत्वाकांक्षी

पाठ 14 - जंगल की मौत पर शोक गीत

लिखित

1. (क) बादल (ख) हवा को
   (ग) बूढ़े बरगद (घ) घना जंगल
2. (क) चौपाल (ख) छेड़छाड़
   (ग) हवा (घ) जड़ जीव
   (ङ) पारावार

3.

	किसने कहा	किससे कहा
(क)	बूढ़े बरगद ने	लेखक से कहा
(ख)	स्यानी सी पहाड़ी ने	लेखक से कहा
(ग)	नदी ने कहा	लेखक से कहा
(घ)	खेत ने	लेखक से कहा।

4.

	वर्ग 'अ'	वर्ग 'ब'
(क)	सुनारी, लोहारी, बढ़ईगिरी आदि धंधे	राजनीतिक दलों के झंडे
(ख)	चौपाल	थाना और कोतवाली
(ग)	बाँस का जंगल	गत्ते का कारखाना
(घ)	नदी का स्वच्छ जल	कारखाने का काला पानी
(ङ)	चारागाह	खेत

5. (क) बचपन में लेखक नारियल और बरगद के पेड़ को चाचा और बाबा के नाम से संबोधित करता था।

(ख) बाबा बरगद की बात सुनकर लेखक ने कहा— आप दोनों के बीच सागौन चाचा भी थे, जिन्हें हमने सरदान पटेल का नाम दिया था।

(ग) गाँव की नदी बीमार की तरह सुस्त लेटी हुई थी। नदी ने लेखक से कहा, ''अब मैं किसी काम की नहीं रही। गत्ते के कारखाने ने मेरा पानी प्रदूषित कर दिया है। मेरी सारी मछलियाँ मर चुकी हैं। मौत के भय से कोई मेरे पास नहीं आता।''

(घ) वहाँ के लोगों ने पहाड़ी को काट-काट कर पहाड़ी बना दिया। वहाँ के लोगों को पहाड़ के अन्दर छिपे लोहे का पता चल गया और लोहा निकालने के लिए पहाड़ों को काटना शुरू कर दिया।

(ङ) चारगाह इसलिए गीत गा रहा था क्योंकि वहाँ रहने वाले जानवर फिल्मी गीत सुनने के आदि हो गए थे। बांसुरी अब जानवरों पर असर नहीं करती थी।

(च) वर्षों बाद गाँव लौटने पर लेखक ने देखा-ऊँचे-ऊँचे पहाड़ अब पहाड़ी में बदल गए हैं। जंगल साफ हो गए थे। चौपाल, थाना और कोतवाली में बदल गई थी। बांस के जंगल की जगह गत्ते का कारखाना और नदी

का स्वच्छ जल कारखाने के काले पानी में बदल कर दूषित हो गया था।

(छ) बूढ़े बरगद ने लेखक को बताया कि भूलना चेतन प्राणियों का गुण है। हम जड़-जीव कभी परिचितों को नहीं भूलते। तुम्हारी तरह सैंकड़ों बच्चे मेरी छाँह में लुका-छिपी खेलते थे।

(ज) स्थानी पहाड़ी ने बताया कि यहाँ रहने वाले लोगों को मेरे भीतर छिपे लोहे का पता चल गया और बड़ी-बड़ी मशीनों ने हमें काटना और लोहा निकालना शुरू कर दिया और हम सब पहाड़ से पहाड़ी वन गए।

भाषा ज्ञान

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) गंदा (ख) निरर्थक (ग) उदास (घ) हँसना
   (ङ) वर्तमान (च) जीवित (छ) लाभ (ज) सुख
3. (क) जंगल - वन, कानन (ख) नदी - सरिता, बहती, धारा
   (ग) हवा - वायु, वेग (घ) जल - नीर, पेय, पानी

पाठ 15 - दिल्ली मेट्रो

लिखित

1. (क) 24 दिसंबर 2002 (ख) सात लाख
   (ग) माइक्रोप्रोसेसर (घ) मेट्रो कार्ड
   (ङ) बांयी ओर
2. (क) सात (ख) अटल बिहारी वाजपेयी
   (ग) तीस हजारी (घ) 18.50
   (ङ) 1676, 435 (च) नहीं करना चाहिए।
3. (क) दिल्ली ने निरंतर बढ़ते प्रदूषण, जनसंख्या वृद्धि और चरमराती सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को देखते हुए दिल्ली में मेट्रो रेल सेवा का परिचालन अत्यंत आवश्यक हो गया है।

   (ख) सन् 1995 में मेट्रो रेल परिचालन के लिए डी० एम० आर० टी० एस० को गठित किया गया।

   (ग) स्मार्ट कार्ड एक प्रकार का पास होता है। इसे 'यात्री कार्ड' भी कहते हैं। इसका प्रयोग मेट्रो रेल में यात्रा करने के लिए होता है। इस कार्ड को खरीदने पर 10 प्रतिशत का बोनस मिलता है।

   (घ) मेट्रो रेल परिसर में यात्रियों के लिए बुक स्टॉल, रिफ्रेशमेंट स्टॉल, रेस्टोरेंट, स्नैक प्वाइंट, न्यूजपेपर स्टैंड, मेडिसन स्टॉल तथा ए० टी० एम० जैसी सुविधा उपलब्ध है।

   (ङ) स्टैंडर्ड गेज की चौडाई 1435 मिमी० है। पुरानी गाड़ियाँ इस लाइनों पर नहीं दौड़ पाएगीं। नई गाड़ियों की अपेक्षा यात्रियों के बैठने की क्षमता कम होगी।

   (च) नई मेट्रो में निम्न मार्गों पर चल रही है— (1) सचिवालय से बदरपुर (20.16 कि० मी०), (2) इंद्रलोक से मुंडका (18.50 कि० मी०), (3) नई दिल्ली से एयरपोर्ट (19.50 कि० मी०) इन तीनों मार्गों पर वर्तमान ब्रॉड गेज की जगह स्टैंडर्ड गेज की लाइनें बिछाई गई हैं।

   (छ) एयरपोर्ट मेट्रो में खड़े होकर यात्रा करने का कोई विकल्प नहीं है। नई दिल्ली से एयरपोर्ट के बीच लगभग 19 कि० मी० की लंबाई में बिछाई गई मेट्रो की यह एक्सप्रेस लाइन स्टैंडर्ड गेज की होगी। यह ट्रेन शिवाजी स्टेडियम स्टेशन से पालम एअरपोर्ट तक है जो 15 या 16 मिनट में एयरपोर्ट पहुँचा देती है। यात्रियों का चेक-इन भी नई दिल्ली या शिवाजी स्टेशनों पर ही होता है। यात्रियों की जानकारी के लिए एयर पोर्ट मेट्रो के डिब्बों में टेलीविजन और हवाई उड़ानों की सूचना देने की पूरी व्यवस्था है।

   (ज) मेट्रो रेल में यात्रा करते समय हमें निम्न नियमों का पालन करना चाहिए—

   1. टिकट लेते समय पंक्ति में खड़े हों।
   2. आपका सामान 15 किलोग्राम से अधिक न हो।
   3. मेट्रो ट्रेन की छत पर न चढ़ें।
   4. मेट्रो के दरवाजों को खोलने की जबरदस्ती न करें।

5. एस्केलेटर के बायीं ओर खड़े हों। चलते समय दायीं ओर रहें।
6. अपंगों के लिए बनाई गई लिफ्ट का प्रयोग न करें।
7. मेट्रो रेल में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें।
8. सहयात्रियों के साथ सहयोग करें।

भाषा ज्ञान

1. सुविधा — असुविधा
   व्यस्तता — खाली
   निकटवर्ती — दूर
   उपलब्ध — अप्राप्त
   आरंभ — अंत
   वृद्धि — कटौती
   सार्वजनिक — असार्वजनिक
   स्वच्छता — अस्वच्छता
   हानिकारक — लाभदायक
   गमन — आगमन
   आधुनिक — पुराना
   तीव्र — धीमे
2. संग्रहालय — संग्रह + आलय
   उद्घोषणा — उद् + घोषणा
   निरंतर — निर + अंतर
   अनुकूल — अनु + कूल
   अत्यावश्यक — अत्य + आवश्यक
   सुगम — सु + ड्गम
   सचिवालय — सचिव + आलय
   देवालय — देव + आलय
   सर्वोत्कृष्ट — सर्वो + उत्कृष्ट
3. (क) अर्थ — किसी काम के लिए हाँ कहना
   (ख) अर्थ — धोखा देना
   (ग) अर्थ — राज खोलना
   (घ) अर्थ — काम बिगड़ना
   (ङ) अर्थ — हराना
   (च) अर्थ — भाग जाना
   (छ) अर्थ — हराना
   (ज) अर्थ — पक्का इरादा

पाठ 16 - फुसफुसाहट

लिखित

1. (क) वह उसकी हाँ में हाँ नहीं मिलाता था।
   (ख) उसे अपमानित कर निकाल दिया।
   (ग) सोने की मोहरें
   (घ) आपके चारों तरफ बेईमान ही बेईमान हैं।
2. (क) पढ़ाई समाप्त करने के बाद राजू गाँव छोड़कर एक बड़े शहर में रहने लगा।
   (ख) राजू को अपने प्रधानमंत्री होने पर घमंड था।

(ग) राजू ने रघू से कहा कि तुम बहुत दरिद्र दिखाई दे रहे हो, और तुमने कितने गंदे कपड़े पहने हैं। तुम्हारे पास घोड़ा तो क्या एक खच्चर भी नहीं है। मेरी तरफ देखो, राजा जैसा लग रहा हूँ। देवता भी मुझसे ईर्ष्या करते हैं।

(घ) सच्चाई जानने पर राजा ने रघु को अपना प्रधानमंत्री बना लिया।

(ङ) अजनबी राजू ही था और उसने राजा से कहा, ''महाराज, इतने दिनों से मैं आपके कान में ऊलजलूल कह रहा हूँ, लेकिन आज मैं आपको एक थैली भेंट करने आया हूँ। यह कह कर उसने एक रेशम की थैली राजा को दी, जिसमें दस हजार सोने की मोहरें थीं। रघु ने कहा— आपके चारों तरफ बेईमान हैं।

(च) क्योंकि राजू ने राजा से बेइमानी और धोखाधड़ी की थी। और रघू के उसकी तरफ ताकने से वह डर गया था।

(छ) अजनबी ने राजा को वह दस हजार मोहरों की थैली भेंट की, जो राजू ने उसे दी थी। अजनबी ने राजा से बताया कि आपके चारो तरफ बेईमान ही बेईमान हैं। कोई अधिकारी अपने-अपने पदों के लायक हैं। अगर प्रधानमत्री और दूसरे मंत्री ईमानदार होते, सेनापति ने सच्चाई से कर्त्तव्य पालन किया होता, अगर खजांची और मुख्य न्यायाधीश भ्रष्ट न होते तो यह सब इतना नहीं घबराते।

भाषा ज्ञान

1. हाथी — गर्दभ (✗)
   उत्सव — पावन (✗)
   नमस्कार — जय (✗)
   दरिद्र — दुखी (✗)
   उपहार — वस्तु (✗)
   राजा — नायक (✗)
2. **तद्भव** **तत्सम**
   सिर — राशि
   घोड़ा — अश्व
   गाँव — ग्राम
   हाथी — गज
   काम — कर्म
   हाथ — हस्त
   घर — गृह
   मुँह — मुख
   सोना — स्वर्ण
   कान — कर्ण
3. स्वयं कीजिए।
4. वेद + अंत = वेदांत
   सदा + एव = सदैव
   पुस्तक + आलय = पुस्तकालय
   इति + आदि = इत्यादि
   वीर + अंगना = वीरांगना
   पर + उपकार = परोपकार
   महा + उत्सव = महोत्सव
   युग + अंत = युगांत
   प्रति + एक = प्रत्येक
   देव + ऋषि = देवऋषि
5. (क) रमा + एश (ख) छात्र + आवास

(ग) विद्या + अर्थी (घ) हिम + आलय

(ङ) महा + उत्सव (च) जन्म + आंध

पाठ 17 - कुंडलियाँ

लिखित

1. (क) पानी (ख) बिगड़ जाता है।

   (ग) बिना विचार किये कार्य करते हैं। (घ) लगन से करते हैं।

   (ङ) दौलत

2. (क) घर में बाढ़े दाम, दोनों हाथ उलीचिए, राम की सुमिरन कीजै, पर स्वारथ के काज, पाहुन निस दिन चारि रहत

   (ख) न कीजिए सपने में अभिमान, चंचल जल दिन चारि को, अरे यह सब घट दौलत, पाहुन निस दिन चारि रहत।

3. (क) जीवन को सुखी बनाने के लिए ईश्वर का स्मरण करते हुए दूसरे के कार्य सिद्धि के लिए अपने सिर तक का बलिदान देने से नहीं चूकना चाहिए। सदैव दूसरों की खुशी का ध्यान रखना चाहिए।

   (ख) इस पंक्ति से हमें यह संदेश मिलता है— उचित व सही रास्ते पर चलते हुए व्यक्ति को अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखनी चाहिए। अर्थात सदैव ईमानदारी के रास्ते पर चलना चाहिए।

   (ग) बिना विचार या बिना सोचे काम करने से काम बिगड़ता है। और बाद में पछताना पड़ता है।

   (घ) इस पंक्ति का अर्थ है— कवि कहते हैं, कि साई, अपने मन की बात किसी से भूलकर भी नहीं करनी चाहिए।

   (ङ) अपना काम बिगड़ने पर पूरे जगत में हँसी होती है। और जगत में हँसी होकर उसे मन की शांति नहीं मिलती।

भाषा ज्ञान

1. पानी — वानी, मानी
   कीजै — दीजै, लीजै
   चतुर — वतुर
   दाम — काम
   सम्मान — खान, पान
   दौलत — वौलत
2. दुर्गम — दुर्गम
   कारज — कार्य
   काज — काम
   उनहीं — उन्हें
   अनावश्यक — अनावश्यक
   बाढ़ै — बढ़ना
   बानी — वाणी
   दुरजन — दुर्जन
   शंकराचार्य — शंकराचार्य
   सयानो — सयाना
   आपनो — अपना
   जिय — हृदय
3. (क) नाव — नदी में चलने वाली नाव
   नव — नया
   (ख) दाम — कीमत

दम — ताकत

(ग) धीर — सिपाही

धरि — रखना

पाठ 18 - नेहरू जी की बेटी इंदु के नाम पत्र

लिखित

1. (क) संसार रूपी पुस्तक को पढ़ना।

(ख) धरती का तापमान बहुत अधिक था।

(ग) बाल का कण

2. (क) मनुष्यों से पहले धरती पर सिर्फ जानवर थे तब इस धरती का तापमान भी बहुत अधिक था।

(ख) मनुष्यों को जानने के लिए हमें संसार रूपी पुस्तक को पढ़ना होगा। जिससे हम दुनिया का पुराना हाल भी ज्ञात कर सकते हैं। पुराने जमाने में लिखी हुई किताबें न होने पर कुछ ऐसी चीजें हैं, जो हमें पुरातत्व समय की बातें बताती हैं।

(ग) नेहरू जी के पत्र उनकी पुत्री के नाम पुस्तक में संकलित हैं। इन पत्रों के द्वारा वह अपनी पुत्री को विभिन्न जानकारी देते थे। उन्होंने 'भारत एक खोज' और 'भारत का इतिहास' नामक प्रसिद्ध पुस्तकें भी लिखीं।

(घ) किसी भी भाषा की पुस्तक पढ़ने के लिए हमें सर्वप्रथम उसके अक्षरों का पूर्ण ज्ञान लेना होगा।

(ङ) नेहरू जी ने प्रकृति के अक्षरों के बारे में पढ़ने से पहले हमें पत्थरों और चट्टानों की किताबें पढ़नी होंगी। जब हम कोई छोटा-सा गोल, चिकना रोड़ा देखते हैं, तो क्या वह तुम्हें कुछ नहीं बताता कि वह गोल चिकना कैसे हो गया? अगर हम ध्यान से देखें या सुनें तो उसी के मुँह से उसकी कहानी सुन सकते हैं।

(च) बड़ी चट्टान का टुकड़ा जो पहाड़ के दामन में पडा था, तभी पानी आया, उसे बहा कर छोटी घाटी में ले गया। वहाँ से एक पहाड़ी नाले ने धकेल कर उसे दरिया में पहुँचा दिया। इस छोटे से दरिया से बह बड़े दरिया में पहुँचा। दरिया के पैंदे में लुढ़कते-लुढ़कते उसके किनारे घिस गए और चिकना व चमकदार हो गया। इस तरह वह कंकड़ बन गया।

(छ) परियों की कहानियाँ काल्पनिक होती हैं जिन्हें हम बिना देखे गढ़ लेते हैं। लेकिन पुरानी किताबें हमें अपने इतिहास के बारे में संपूर्ण जानकारी देती हैं।

(ज) नेहरू जी बताते हैं— दुनिया का हाल जानने के लिए दूसरों की लिखी पुस्तकों से काम नहीं चलेगा, बल्कि हमें संसार रूपी पुस्तक का अध्ययन करना होगा। एक छोटा-सा रोड़ा जो हम सड़क पर पड़ा देखते हैं, शायद वह संसार की पुस्तक का छोटा-सा पृष्ठ हो, और उससे तुम्हें कोई नई बात मालूम हो जाए।

भाषा ज्ञान

1. पुस्तक — किताब, पत्रिका
   पर्वत — पहाड़, पर्वत
   कहानी — कथा, कथानक
   पत्र — संदेश, चिट्ठी
   समुद्र — सागर, सिंधु
   कोशिश — प्रयास, प्रयत्न
2. मुश्किल — आसान
   खुरदरा — मुलायम
   जानदार — बेजान
   आबाद — निर्बाध
   विद्वान — मूर्ख
   अंत — आदि
3. शौक — शौकीन

चमक — चमकीला
रस — रसीला
रंग — रंगीन
पत्थर — पथरीला
नमक — नमकीन
नोक — नुकीला
जहर — जहरीला

4. (क) कमरे बहुत बड़े हैं।
(ख) लड़कियाँ नृत्य कर रही हैं।
(ग) कल मैंने कलमें खरीदीं।
(घ) चिड़ियाँ घोंसलों में बैठी हैं।
(ङ) आकाश में पतंगें उड़ रही हैं।

शिक्षक सहायता किताब
हिंदी कक्षा-8

पाठ 1 - यह धरती कितना देती है

लिखित

1. (क) अर्थ - कवि नहते हैं कि बचपन में सबसे छिपाकर कुछ पैसे बोए थे। मैंने सोचा था कि इन पैसों के प्यारे-प्यारे पेड़ उगेंगे। रुपयों की कलीदार मधुर फसलें खनक कर आएँगी। और उनका फूल बनकर मैं मोटे सेठ की तरह बैठूँगा।

(ख) (i) देखा आँगन में छोटे-छोटे छाता ताने हुए कि विजय पताका जीवन की हथेलियों को खोलकर पंख मारकर उड़ने को उत्सुक अंडों को तोड़कर चिड़ियों के बच्चे से निकलकर प्रतीत हो रहे थे।

(ii) मैं अब समझता हूँ कि यह धरती रत्न उत्पन्न करने वाली है। इसमें भेदभाव रहित के दाने बोने हैं, जिसमें व्यक्तियों के सामर्थ्य के दाने बोने हैं। इसमें मानव की ममता के दान्तों को बोया है जिसमें से सुनहरी लहलहाती फसलें निकलती हों।

(iii) हम जो कार्य करेगें, वैसे ही फल की प्राप्ति होगी।

2. (क) बचपन में कवि ने पैसों को धरती में बोया और उसकी फसल न उगने पर धरती को बंध्या कहा।

(ख) (i) देखा आँगन में छोटे-छोटे छाता ताने हुए कि विजय पताका जीवन की हथेलियों को खोलकर पंख मारकर उड़ने को उत्सुक अंडों को तोड़कर चिड़ियों के बच्चे से निकलकर प्रतीत हो रहे थे।

(ii) मैं अब समझता हूँ कि यह धरती रत्न उत्पन्न करने वाली है। इसमें भेदभाव रहित के दाने बोने हैं, जिसमें व्यक्तियों के सामर्थ्य के दाने बोने हैं। इसमें से मानव की ममता के दातों को बोया है। जिसमें सुनहरी लहलहाती फसलें निकलती हों।

(iii) हम जो रार्य करेगें वैसे ही फल की प्राप्ति होगी।

(ग) बेल को फैलकर हरा-भरा और लदा-फदा देखकर वह विस्मय से हर्ष विमूढ़ हो उठा।

(घ) छाते के समान।

(ङ) पैसे।

(च) ताकि पैसों का पेड़ उगे और वह सेठ बन जाए।

(छ) काले बादलों के बरसने पर उसने सेम के बीज बो दिए।

(ज) बेल फैलकर सारे आँगन में छा गई। हरे-हरे झरनों की तरह वह ऊपर की ओर फूट पड़े। इस वंश को बढ़ते देखकर वह चौंक उठा।

(झ) जब उस धरती पर एक भी पौधा न निकला, तब भूल का एहसास हो गया कि गलत बीज बो दिए गए थे।

(ञ) पैसे बोने पर धरती में से पौधा न निकलने पर कवि ने धरती को बाँझ कहकर उसका अपमान किया था।

भाषा ज्ञान

1. सच्ची **भावना**, प्यारी **धरती**, ममतामयी

कजरारे **बादल**, सुनहली **फसलें**, विजय **पताका**

प्यारे बच्चे, बौने दाने

2. (क) व (ग) सर्वनाम (ख) सार्वनामिक विशेषण

पाठ 2 - लालच बुरी बला है

लिखित

1. (क) रत्नों से लदे चालीस ऊँट पाने पर।
   (ख) केवल रत्नों को।
   (ग) रत्नों से लदे चालीस ऊँट।
2. (क) भोग विलास में सारा धन उड़ा दिया।
   (ख) यहाँ से कुछ दूरी पर ऐसी जगह है, जहाँ अपार द्रव्य भरा पड़ा है। तुम इन अस्सी ऊँटों को बहुमूल्य रत्नों और अशर्फियों से लाद सकते हो।
   (ग) वह उस पर ऐसे झपटा जैसे शेर शिकार पर।
   (घ) वह सारे ऊँट और उन पर लदी संपत्ति लेकर बसरा की ओर चल दिया।
   (ङ) स्वयं करें।
   (च) फकीर उसे संपत्ति पाने का रास्ता बता रहा था।
   (छ) फकीर ने लकड़ियाँ एकत्र करके उसमें आग लगाकर सुगंधित द्रव्य डाला। धुएँ का बादल उठा और वह एक जगह जाकर फट गया और भवन का भव्य द्वार दिखाई दिया।
   (ज) फकीर ने वह सोने की संदूकची खोली, उसमें से लकड़ी की एक डिबिया निकाली और उसमें मरहम देखकर उसे अपनी जेब में रख लिया।
   (झ) फकीर से सोने से लदे ऊँट लेने के बारे में।
   (ञ) दाहिनी आँख में मल्हम लगाने से तुम हमेशा के लिए अंधे हो जाओगे।
   (ट) तुम जाकर सारी भिक्षुक-मंडली को अपनी कथा बताओ, ताकि सभी को मालूम हो कि लालच का क्या फल होता है। अब तुम भीख माँगना छोड़ दो। मेरे खजाने से तुम्हें हर रोज पाँच रुपये मिलेंगे।
   (ठ) स्वयं करें।

भाषा ज्ञान

1. (क) जातिवाचक (ख) जातिवाचक
   (ग) व्यक्तिवाचक (घ) जातिवाचक
   (ङ) व्यक्तिवाचक (च) जातिवाचक
   (छ) जातिवाचक (ज) भाववाचक
2. (क) उद्देश्य– चालीस ऊँट का धन,
   विधेय– मेरे लिए पर्याप्त होगा।
   (ख) उद्देश्य– रास्ते में चलते हुए,
   विधेय– मैं थककर पेड़ की छाँव में बैठ गया।
   (ग) उद्देश्य– तुम,
   विधेय– दस ऊँट और ले लो।
3. (क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य
   (ग) मिश्र वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य

पाठ 3 - परीक्षा

लिखित

1. (क) सरदार सुजानसिंह अनुभवशीलता और नीतिकुशल दीवान थे।
   (ख) इस ऊँचे पद के लिए सनद का कोई विशेष बंधन नहीं था।
   (ग) पंडित जानकी नाथ ने
2. (क) सुयोग्य दीवान की प्राप्ति के लिए राजा साहेब ने विज्ञापन निकलवाया था।
   (ख) ऐसा ऊँचा पद और किसी प्रकार की कैद नहीं। किसी सनद की आवश्यकता नहीं थी।
   (ग) अपने आपको सही उम्मीदवार जताने के लिए सभी दिखावा कर रहे थे।
   (घ) सभी उत्साह से खेल रहे थे व संध्या तक पसीने में तर हो गए, मगर कोई गोल न हो सका।
   (ङ) किसी खिलाड़ी ने किसान की मदद नहीं की और उसे देखकर चलते गए।
   (च) दीनबंधु! दास ने श्रीमान की सेवा चालीस वर्षों तक की, अब कुछ दिन परमात्मा की भी सेवा करने की आज्ञा चाहता हूँ। अब अवस्था भी ढल गई, राज-काज संभालने की शक्ति नहीं रह गई, कहीं भूल-चूक हो जाए, तो बुढ़ापे में दाग लगे, सारी जिंदगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाए।
   (छ) क्योंकि इस ऊँचे पद के लिए कोई पाबंदी नहीं थी। कोई भी भाग ले सकता था। किसी सनद की आवश्यकता नहीं थी।
   (ज) (i) बूढ़ा जौहरी - सरदार सुजान सिंह

   बगुला - सभी उम्मीदवार

   (ii) किसान बनकर अपनी बैलगाड़ी को कीचड़ में फंसाकर मददगार की राह तकने लगा।
   (झ) (i) सुजान सिंह ने।

   (ii) कुछ पाने के लिए कष्ट तो उठाने ही पड़ते हैं।
   (ञ) सुजानसिंह की तरह उदार, वीरता के साथ विपक्षी का सामना करने वाला ईमानदार, पंडित जानकीनाथ।
   (ट) हाँ।

भाषा ज्ञान

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) मैं- पुरुषवाचक (ख) आप- प्रश्नवाचक
   (ग) निजवाचक (घ) अनिश्चयवाचक
   (ङ) संबंधवाचक (च) निश्चयवाचक
3. (क) नागरिक, उम्मीदवार, अविस्मरणीय, अजेय (ख) वाक्य स्वयं बनाइए।

पाठ 4 - गोशाला

लिखित

1. (क) रामफल काका अक्कल के घर।
   (ख) घर में पानी-पानी हो रहा था।
   (ग) अच्छे दिनों में वह मरम्मत नहीं कराते थे।
   (घ) रामफल अक्कल के घर मरम्मत के लिए कहने जा रहे हैं।
   (ङ) रामफल काका के साम-दाम-दंड-भेद के सामने।
2. (क) बूढ़ी अपाहिज गायों, बैलों की रक्षा के लिए।
   (ख) मरम्मत करना, दीवार बनाना, छप्पर बनाना।
   (ग) दो बेटे और एक बेटी।
   (घ) रामफल काका का शानदार बंगला अक्कल की वास्तु-विद्या के अपार ज्ञान का उत्कृष्ट नमूना था। अत: सभी उसकी खुशामद करते थे।

(ङ) उनकी सेवा जरुर करता था।

(च) रामफल काका गाँव के सबसे धनी व्यक्ति होने के बावजूद सबसे कंजूस व्यक्ति थे।

(छ) अक्कल बेचारा अब भीख माँगता है जिसने गाँव भर को घर दिया, वही बेघर-बार है।

(ज) किस तरह जिंदगी की उठान के समय अपनी पूरी शक्ति से रामफल बाबू की मजदूरी की, किस तरह उनकी कितनी ही परती जमीन को उसने हरा-भरा खेत बना डाला, किस तरह उसने मकान बनाए।

(झ) अक्कल के साथ अन्याय हुआ था।

(ञ) (i) लेखक ने अक्कल के संदर्भ में।

(ii) अक्कल की ओर

(iii) स्वयं करें।

भाषा ज्ञान

1. (क) दाल-भात (ख) कुशल (ग) परती
   (घ) घूरा (ङ) गोशाला।
2. (क) उदार (ख) भूखा (ग) चतुर
   (घ) प्यासा (ङ) कठोर (च) मूर्ख
   (छ) उत्कृष्ट (ज) बूढ़ा
3. उच्चतर, उच्चतम
   अधिकतर, अधिकतम
   सुंदरतर, सुंदरतम
   निम्नतर, निम्नतम
4. (क) भूख से भरा — तत्पुरुष समास
   (ख) आराम के लिए कुर्सी — तत्पुरुष समास
   (ग) व्यवहार में कुशल — तत्पुरुष समास
   (घ) खाना और पीना — द्वंद्व समास
   (ङ) हर दिन — अव्ययी भाव
   (च) खर और पात — द्वंद्व समास
   (छ) पेट भर के — अव्ययी भाव
   (ज) कपड़ा और लत्ता — द्वंद्व समास

पाठ 5 - चाँदी का जूता

लिखित

1. (क) रमा (ख) छह सौ रुपए
   (ग) वेंकटेश्वर राव ने (घ) सिविल सप्लाई अफसर थी।
   (ङ) क्योंकि वह उल्टे पैर के जूते की आकृति जैसा बना था।
2. (क) वेंकटेश्वर राव ने। (ख) ब्लिट्ज
   (ग) क्योंकि उन्हें न्योता नहीं मिला था। (घ) लेखक ने।
   (ङ) रमा अपने को अपनी बहू से कम स्तर का महसूस कर रही थी।
   (च) वेंकटेश्वर राव की शादी रमा से हुई थीं, जो कि सुव्यवस्थित महिला थीं।
   (छ) सीमा ने एम० ए० प्रथम श्रेणी में किया है। विश्वविद्यालय में प्रथम आयी हैं व स्वर्ण पदक भी प्राप्त किया है।
   (ज) बहू दहेज लेकर आयी थी और बात-बात पर दहेज की धौंस देती थी।
   (झ) क्योंकि यह ट्रे बहू के दहेज में आयी थी और वेंकटेश्वर दहेज-प्रथा के विरोधी थे। पर पत्नी के दबाव में उन्होंने दहेज की माँग की थी।

(ञ) वे बहुत भद्रपुरुष व ईमानदार थे।

(ट) क्योंकि तब वह अपने आदर्शों का पालन कर सकते थे।

भाषा ज्ञान

1. (क) चद्रं सा है मुख — कर्मधारय समास

(ख) चार हैं पांसे — द्विगु समास

(ग) गज जैसा आनन है जिसका अर्थात् गणेश — बहुब्रीहि समास

(घ) तीन हैं नयन — द्विगु समास

(ङ) नीली है गाय — कर्मधारय समास

पाठ 6 - बिंदा

लिखित

1. (क) खंजड़ी के ऊपर चढ़ी हुई झिल्ली के समान पतले चर्म से मढ़े और भीतर की हरी-हरी नसों की झलक देने वाले उसके दुबले हाथ-पैर न जाने किस अज्ञात भय से अवसन्न रहते थे।

(ख) उसका सारा शरीर थरथरा उठता था।

(ग) पिंजरे में बंद चिड़िया की।

(घ) जिस अम्मा को ईश्वर बुला लेता है, वह तारा बनकर ऊपर से बच्चों को देखती है।

2. (क) भीत-सी आँखों वाली दुर्बल, छोटी और अपने-आप में सिमटी-बालिका को देखकर।

(ख) जिस अम्मा को ईश्वर बुला लेता है, वह तारा बनकर ऊपर से बच्चों को देखती है।

(ग) लेखिका की माँ ममतामयी थी। सबकी परवाह करने वाली थी।

(घ) दूध उबलने पर बिंदा बर्तन को उतार रही थी, जिस पर वह गिर गया और दूध बिखर गया।

(ङ) बिंदा की माँ के मरने पर वह नयी माँ की सेविका बनकर रह गयी थी, जिस पर लेखिका बिंदा की अवस्था देखकर घबरा गयी थी।

(च) उनकी विशेष कारीगरी से सँवारी पाटियों के बीच से लाल स्याही की मोटी लकीर-सा सिंदूर, उनींदी-सी आँखों में काले डोरे के समान लगने वाला काजल, चमकीले कर्णफूल, गले की माला नगदार रंग-बिरंगी चूड़ियाँ और घूँघरूदार बिछुए मुझे बहुत भाते थे, क्योंकि ये सब अलंकार उन्हें गुड़िया की समानता देते थे।

(छ) वह उसकी माँ के विपरीत तीखे स्वर में चिल्लाती बिंदा को झिड़की देती, उसे कोसती थी।

(ज) झाड़ू देना, आग जलाना, आँगन के नल से कलसी में पानी लाना, नयी अम्मा को दूध का कटोरा देना आदि।

(झ) दूध गिर जाने पर बिंदा बहुत डर गयी व लेखिका से छिपाने को कहा। तब वह लेखिका के साथ उसके घर में उस कोठरी में जा छिपी, जिसमें गाय की घास भरी जाती थी। पर वह भी उसे रेशम जैसा लगा।

(ञ) वह उनसे बहुत डरती थी, क्योंकि चाची उस पर बहुत जुल्म करती थी।

(ट) लेखिका ने चाची के अत्याचारों के संदर्भ में कहा था।

भाषा ज्ञान

1. (क) मैं बिंदा की नई अम्मा को पंडिताइन चाची कहती थी।

(ख) मेरे लिए घर के सब काम करना असंभव

(ग) मैं मन-ही-मन बुलाने का संकल्प कर लूँगी।

2. (क) कर्तृवाच्य (ख) कर्तृवाच्य

(ग) कर्मवाच्य (घ) भाववाच्य।

3. (क) अन् +वेषज (ख) अधिक + अंश

(ग) स्व + आगत (घ) सप्त + ऋषि

(ङ) जल + आशय (च) मात्र + आज्ञा

पाठ 7 - नीड़ का निर्माण

लिखित

1. (क) डरा हुआ (ख) भूरे-भूरे रंगों वाला
   (ग) रात्रि का (घ) पूरब दिशा
2. (क) कवि कहता है कि सब कुछ नष्ट होने पर भी घोंसले का निर्माण फिर स्नेह के आमंत्रण से हो रहा है।
   (ख) पक्षी के लिए।
   (ग) प्रस्तुत कविता में कवि के जीवन का संघर्ष छलक रहा है।
   (घ) उल्लास और उत्साह के रूप में
   (ङ) बया के घोंसले से।
3. (क) भाव - आशाओं के पक्षी कहते हैं कि किस जगह पर तू छिपा है, जो आकाश पर गर्व से फिर उठ चला है। घोंसले का निर्माण फिर से हो रहा है।
   (ख) भाव - रात के भय से सभी व्यक्ति डरे हुए थे। उनका कण-कण डरा हुआ था। किंतु पूरब दिशा से निकली हुई सुबह मंद-मंद मुस्कुरा रही थी।
4. (क) वह उठी आँधी की नभ में
   छा गया सहसा अँधरा
   धूरि-धूसर बादलों ने
   भूमि को इस भाँति घेरा।
   (ख) बह चले झोंके कि काँपे
   भीम कायावान भूधर
   जड़ समेत उखड़-पुखड़ कर,
   गिर पड़े टूटे विटप पर।

भाषा ज्ञान

1. नदियों का भयंकर वेग, कंकड़, साँप।
2. विषधर — विष को धरने वाला अर्थात् साँप।
   घडता — आगे बढ़ना
3. कंटक — किंकड़
   अपना — स्वयं
4. स्वयं करें।
   पर्यायवाची शब्द—
   (क) धरा, धरती। (ख) आकाश, गगन।
   (ग) व्योम, मेघ। (घ) निशा, रात।
   (ङ) पेड़, तरू (च) पहाड़, पर्वत।

पाठ 8 - कर्तव्यबोध

लिखित

1. (क) न्यूयॉर्क के रेस्तरां में।
   (ख) उसके गले के स्कार्फ को देखकर।
   (ग) वह दक्षिण में अपनी किस्मत आजमाने गया।
   (घ) जब उसके मित्र ने सिगार सुलगाया।
   (ङ) उसका मित्र हजारों मील दूर से उससे मिलने आया है।
2. (क) कोई खास बात नहीं है। मैं एक मित्र की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। बीस साल पहले यहाँ पर एक रेस्तरां था और

मैंने अपने मित्र से वादा किया था कि पूरे बीस साल बाद इसी स्थान पर हम मिलेंगे।

(ख) पाँच साल पहले।

(ग) बीस साल पूर्व, दस बजे।

(घ) एक अन्य पुलिस वाले को।

(ङ) बॉब अपनी किस्मत आजमाना चाहता था, व धनी व्यक्ति बनना चाहता था।

(च) उनका फैसला था कि इसी रात, इसी समय बीस, साल बाद हम यहीं मिलेंगे।

(छ) क्या तुम बॉब हो?

(ज) (i) लंबे व्यक्ति ने बॉब के अपराधी बनने के संदर्भ में।

(ii) बॉब के लिए क्योंकि वह अपराधी बन गया था।

भाषा ज्ञान

1. (क) में — अधिकरण (ख) ने — कर्त्ता
   (ग) के — संबंध (घ) से — करण
   (ङ) से — अपादान
2. स्वयं करें।
3. (क) नहीं (ख) नहीं
   (ग) मत (घ) न, न
   (ङ) नहीं।
4. (क) विधानवाचक (ख) निषेधवाचक
   (ग) विधानवाचक (घ) प्रश्नवाचक
   (ङ) विस्मयवाचक (च) निषेधवाचक।

पाठ 9 - चिकित्सा का चक्कर

लिखित

1. (क) नानी की मौसी। (ख) चुड़ैल का साया।
   (ग) डॉक्टर से। (घ) इसमें तुम्हारा क्या हर्ज है?

उचित विकल्प

(क) रात के तीन बजे।

(ख) इक्के पर।

(ग) डा० चूहानाथ कातर जी के इलाज से।

(घ) हकीम साहब की।

2. (क) बीमार पड़कर।

(ख) 'अमृतधारा' की एक बूँद पी ली।

(ग) वैद्य, हकीम, डॉक्टर के इलाज का।

(घ) जो भी आता एक से एक नुस्खा अपने साथ लाता था।

(ङ) देखने आये, लोग आते, पान खाते या सिगरेट पीते।

(च) रिफ्रेशमेंट ज्यादा खाने के बाद घर में बारह पूरियाँ, आधा पाव मलाई व छह रसगुल्ले।

(छ) हींग पिला दो, चूना खिला दो, आदि।

(ज) डा० चूहानाथ कातरजी। नींद आ गयी और दूसरे दिन प्रात: काल पीड़ा रफूचक्कर थी।

(झ) ऐसी हँसी केवल कवि-सम्मेलन में बेढंगी कविता पढ़ने के समय सुनाई देती है। उन्होने पाइरिया रोग बताया व दंत चिकित्सक को दिखाने की सलाह दी।

(ञ)स्वयं करें।

(ट)स्वयं करें।

भाषा ज्ञान

2.

तत्सम	तद्भव	देशज	विदेशी
सूक्ष्म	सिनेमा	हट्टा-कट्टा	रिफ्रेशमेंट
महोदय	मलाई	खुराक	लोडी
दुपट्टा	खुराक	पिचकारी	होमियोपैथिक
पत्रिका	कविराज	चारपाई	ऑपरेशन
बटौनी	फसाद	कतर-ब्यौत	–
चिकित्सा	उब्बड़वाना	पक्का	–
वर्षगाँठ	घड़ीसाज	चुड़ैल	–
तत्सम	तद्भव	देशज	–
कक्ष	–	–	–

3.

पैंतीस	मरीजों	मर्ज़
गंभीर	भाँति	संक्रांति
पहुँच	सुइयां	रफूचक्कर
दाँत	रिफ्रेशमेंट	मिज़ाज
नज़ाकत	रसज्ञरंजन	इंजेक्शन

पाठ 10 - श्रीराम की बाल-लीला

लिखित

1. (क) आकाश स्थित चंद्रमा को।
   (ख) अपनी ही परछाई से।
   (ग) बालक को हाथों से तालियाँ बजाकर नाचते देखकर।
   (घ) अवधी भाषा का।
   (ङ) कवितावली।
2. (क) आँगन में।
   (ख) कुंद के फूलों के पत्तों की तरह।
   (ग) मन आनंदित होता है।
   (घ) ?
   (ङ) बालकों के हँसने पर मन को प्रसन्नता होती है।
   (च) कभी चाँद माँगते हैं, कभी परछाई से डरते हैं, कभी ताली बजाकर नाचते हैं।
   (छ) उसकी कमल के समान आँखे भौरे की तरह सुशोमित हैं। उनकी आँखों की सुंदरता कलम के समान श्याम वर्ण की हैं। उनका सुंदर शरीर कामदेव की तरह प्रतीत हो रहा है।

भाषा ज्ञान

1. (क) कभी भी (ख) स्वयं कीजिए
   (ग) माँगता (घ) स्वयं कीजिए
   (ङ) तभी (च) बसता है
   (छ) न्योछावर होना (ज) विहार करें
2. (क) ने – कर्त्ता, को – कर्म (ख) से – करण
   (ग) संबंध (घ) संबंध व कर्म
   (ङ) कर्म कारक (को)

पाठ 11 - मैं और मेरा देश

लिखित

1. (क) जापान
   (ख) पाव-भर शहद
   (ग) दूसरे देशों को श्रेष्ठ और अपने देश को हीन सिद्ध करते हुए।

पठित गद्यांश

(क) स्वर्गीय पंजाब केसरी लाला लाजपतराय।

(ख) मेरा कर्तव्य है कि मुझे निजी रूप से सारे संसार का राज्य भी क्यों न मिलता हो, मैं कोई ऐसा काम न करूँ, जिससे मेरे देश की स्वतंत्रता को, उसके सम्मान को धक्का पहुँचे, या सम्मान में कमी आए।

(ग) अपने देश के सम्मान का पूरा-पूरा भाग मुझे मिले और उसकी शक्तियों से अपने सम्मान की रक्षा का अधिकार हो।

(घ) (i) पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय।
(ii) गुलाम देश के नागरिक होने की पीड़ा।

2. (क) लेखक सोचता था कि उसकी मनुष्यता में अब कोई अपूर्णता नहीं रही, मुझे अब कुछ न चाहिए, जो चाहिए। वह सब मेरे पास है। मेरा घर मेरा पड़ोस, मेरा नगर और मैं। वाह! कैसी सुंदर, कैसी संगठित और कैसी पूर्ण है मेरी स्थिति!

(ख) जब उसे लगा कि उसका कहीं भी कोई अपमान कर सकता है।

(ग) मानसिक विचारों, मानसिक विश्वासों की दीवार में दरार पड़ने को 'मानस में भूकंप' कहा है।

(घ) दर्शक की तालियों से खिलाड़ियों के पैरों में बिजली लग जाती है और गिरते खिलाड़ी उभर जाते हैं।

(ङ) दाद देने वालों पर निर्भर करती है।

(च) लाला लाजपत राय ने अपने महान राष्ट्र की पराधीनता के दिनों में अपने रक्त से गौरव के दीपक जलाए, भयंकर बवंडरों के झकझोरों में उन दीपकों की बुझने से बचाते रहे।

(छ) लेखक कहावत को झूठ मानता है, क्योंकि इतिहास साक्षी है कि अकेले चने ने कई बार भाड़ फोड़ा है और ऐसे कि भाड़ खील-खील ही नहीं हो गया, उसका निशान तक ऐसा छूमंतर हुआ है।

(ज) स्वामी रामतीर्थ खाने के लिए फल चाह रहे थे। जापानी युवक कहीं दूर से एक टोकरी ताजे फल लाया था।

(झ) कमालपाशा विश्राम के वस्त्रों में ही नीचे बूढ़े व्यक्ति के पास आए और उन्होंने आदर के साथ बूढ़े किसान का उपहार (पाव-भर शहद) स्वीकार किया।

(ञ) दूसरे देशों को श्रेष्ठ और अपने देश को हीन सिद्ध करते हुए।

(ट) हरेक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह, जब भी चुनाव हो, सही उम्मीदवार को अपना मत दे।

(ठ) स्वयं करें।

भाषा ज्ञान

1. (क) जब चिड़िया चुग गयी खेत।
   (ख) पर बल नहीं गया।
   (ग) आरसी क्या, पढ़े-लिखे को फारसी क्या।
   (घ) स्वयं कीजिए।
   (ङ) चौपट राजा
   (च) खरबूजा रंग बदलता है।

उचित विकल्प

(क) कहीं सुख, कहीं दुख

(ख) दोहरा लाभ

(ग) ऊँट के मुँह में जीरा

2. (क) स्थानवाचक क्रिया - (ऊपर)
   (ख) कालवाचक क्रिया - (प्रतिदिन)

(ग) रीतिवाचक क्रिया - (अचानक)

(घ) परिमाणवाचक क्रिया - (कम)

पाठ 12 - खुशियों का खजाना

लिखित

1. (क) पड़ोसी की खुशियों से।
   (ख) परेशानी का सकारात्मक पक्ष खोजकर
   (ग) जिंदगी बचाने का सुख मिला।
   (घ) उस घड़ी को कोसते जब चोट लगी।
2. (क) क्योंकि उन्होंने एक बालक की जान बचायी थी।
   (ख) हर दुख, कष्ट, परेशानी में भी अच्छाई ढूँढना।
   (ग) खुशी के दस सोपान हैं।
   (घ) सकारात्मक सोच, संतुष्ट रहना, खुशियों की प्राप्ति, खुशियाँ बाँटना आदि जीवन में खुश रहने के लिए आवश्यक है।
   (ङ) दूसरों की भावनाओं का आदर करके, उनसे सहानुभूति रखकर, मदद करके और दूसरों के सुख-दुख में सहभागी होकर दूसरों को खुशी दे सकते हैं।
   (च) आत्म-निरीक्षण का अर्थ है, अपने हृदय में झाँकना, स्वयं से बातें करना। इससे हम न केवल अपना विश्लेषण कर सकते हैं, बल्कि उन बातों को दोहरा भी सकते हैं जिनसे हमने खुशी पाई थी।
   (छ) स्वयं करें।

भाषा ज्ञान

1. **गलत पर्याय**
   तट, परंपरा, जुबानी, कर्णप्रिय, कोप
2. **सही विलोम**
   जिंदगी — मौत, संतुष्ट — असंतुष्ट
   निराशा — आशा, परिचित — अपरिचित
   द्वेष — राग,
3. **शुद्ध वर्तनी**
   कवयित्री, नमस्कार, उज्जवल, कृपया, आशीर्वाद, संन्यासी

पाठ 13 - प्रेरणा के स्त्रोत

लिखित

1. (क) तीसरी (ख) साधारण
   (ग) एलफिंस्टन की (घ) India and what it can teach us
   (ङ) गर्म
2. (क) तीसरी (ख) घराने
   (ग) सर्द, अंग्रेज (घ) सत्य कहहुँ लिखि कागद कोरे।
   (ङ) सत्य का पालन (च) समस्याओं, मनोवांछित।
3. i.(च) ii. (ख) iii. (क)
   iv. (ङ) v. (घ) vi. (ग)
   vii. (घ)
4. (क) अंग्रेजी में। (ख) एलफिंस्टन ने।

(ग) बारह आने। (घ) तुलसीदास जी ने।

(ङ) वाल्टर स्कॉट, बंकिमचंद्र इत्यादि के उपन्यास पढ़ें।

5. (क) हिंदुस्तान गर्म देश है। गर्मी के कारण यहाँ के निवासी निर्बल हो गए हैं। इसी कारण सर्द मुल्क के लोगों ने यहाँ आ-आकर हिंदुस्तानियों को हराया और सताया।

(ख) उसकी समझ में आया कि हमारा देश सदा अंग्रेजों की गुलामी में रहेगा।

(ग) उन्होंने समझाया कि उस पुस्तक का लेखक अंग्रेज है। बात उसने झूठी लिखी है।

(घ) नवीं कक्षा में, एक पुस्तकालय में बैठकर।

(ङ) महमूद गजनवी के तीन हजार सवारों को अधनंगे धक्कारों ने 'पलक मारते' अपनी तलवारों के एक ही वार से मय घोड़ों के चीर डाला।

भाषा ज्ञान

पढ़ाई, तरुणाई, कठिनाई

गर्मायी, कटाई, चिकनाई

ठंडाई, बेहयाई, लड़ाई।

1. कम - अधिक, नौजवान - दृद्ध, प्रसंग - संदर्भ, सस्ता - मँहगा, बदरंग - खुशरंग, सत्य - असत्य, निर्बल - सबल, झूठा - सच्चा, लिखना - पढ़ना, झूठी - सच्ची, दिन - रात, प्रश्न - उत्तर।

2. गरमी - गर्मी, नि:बल - निर्बल, ठंड - ठण्ड, छ: - छह, हिंदुस्तान - हिन्दुस्तान, बदरङ्ग - बदरंग, विद्यार्थी - विद्यार्थी, गये - गए, प्रसङ्ग - प्रसंग

3. आना - रुपया, आगमन / जमाना - ठोस करना, प्रतिष्ठित करना, तार - बिजली तार, संदेश तार/ चीर - कपड़ा।

पाठ 14 - भारत की वास्तुकला

लिखित

1. (क) मौर्यकाल का

(ख) अमृतसर में।

(ग) एक हजार वर्ष पूर्व।

2. (क) वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीतकला व काव्यकला।

(ख) वास्तुकला के विकास में मुगल बादशाहों का विशेष योगदान रहा। ताजमहल, बुलंद दरवाजा।

(ग) इसमें बारह मी० ऊँचा एक शिखर है, चार मडंप हैं तथा खंभों पर अत्यंत सुंदर मूर्तियाँ बनी हैं।

(घ) उड़ीसा राज्य में पुरी में। इसमें सूर्य के सात घोड़े बने हुए हैं। सभी सजीव लगते हैं।

(ङ) बुलंद दरवाजा। यह फतेहपुर सीकरी में है।

(च) शाहजहाँ ने।

भाषा ज्ञान

1. (क) अ + द् + व + इ + त + ई + य

(ख) स + म् + ृ + द् + ध + इ

(ग) प् + ्र + त + इ + ब + इ + ँ + ब

(घ) श् + र् + ए + ब् + ठ

(ङ) व् + ृ + ह + द् + ए + श् + व + र

(च) उ + ल् + ल + ए + ख + न + ई + य

2. भ्रमणीय — घूमने योग्य

श्रवणीय — सुनने योग्य

पर्वतीय — पर्वत का

वंदनीय — वंदन के योग्य
दर्शनीय — दर्शन के योग्य
कथनीय — कहने योग्य

पाठ 15 - जेबखर्च

लिखित

1. (क) फर्श के छेद में।
   (ख) माँ के लिए नए कपड़े खरीदना चाहता था।
   (ग) माँ के हाथ में चोट लग गयी थी।
   (घ) जेल में डलवा दूँगा।
   (ङ) उसका उधार चुक गया था।
2. (क) पैसे फर्श के एक छेद में गिर गए।
   (ख) क्योंकि माँ के हाथ में चोट लगने के कारण वह कान पर न जा सकी।
   (ग) छैनी से।
   (घ) दो वर्षों से।
   (ङ) क्योंकि माँ ने साहूकार से पच्चीस रुपए उधार लिए थे।
   (च) बचा के रखे गए पैसों से माँ ने उधार चुका दिया, जिससे मुश्किल समय में उनकी बहुत सहायता हुई।

(छ)स्वयं करें।

भाषा ज्ञान

1. **गलत पर्याय**
   निवेश, दिशा, अश्क, साड़ी, उजाला, कपाल
2. **सही विलोम**
   एक, आरंभ, उधार, सुरक्षित, उत्तर, कठिनता
3. **लिंग बदलिए-**
   माँ - बाप, सम्राट - सम्राज्ञी
   श्रीमान - श्रीमती, कवि - कवयित्री
   आदमी - औरत, साधु - साध्वी
4. **अलग शब्द-**
   जेब्रा, खुरचन, दीनता, क्षमता, चितेरा।

पाठ 16 - छींक

लिखित

1. (क) लाला हरकिशन के घर। (ख) बल पुराण में
   (ग) भैंस को। (घ) नेवला
   (ङ) बिल्ली
2. (क) गायत्री ने, क्योंकि दिन निकल आया था।
   (ख) लाला हरकिशन दास की लड़की की शादी मनोहरलाल के लड़के से करवा दो।
   (ग) पंडित जी ने उसे ऐसा करने को कहा था, क्योंकि नेवला शकुन की चीज और काम पा जाने से पहले उसको देखना शगुन माना जाता है।
   (घ) मुहूर्त बताने।
   (ङ) दूध निकालने के लिए।
   (च) छींकना अशुभ होता है।

(छ) नेवला देखना, गाय और बछड़ा सामने दूध दुहे।

(ज) पंचम मिसिर के उस दिन का अंत उनके अनुसार अपशगुनों से हुआ था।

3. पंचम मिसर — (i) पुराने विचारों वाले पंडित जी।
(ii) शगुन-अपशगुन में अंधविश्वास।

गायत्री — (i) साधारण गृहणी।
(ii) उज्जवल भविष्य की कमाना करती है।

देवीदीन — (i) साधारण ग्वाला।
(ii) अपना काम समय पर करने की कोशिश करता है।

संपत — (i) आज्ञाकारी।

भाषा ज्ञान

1. स्वयं करें।
2. (क) (i) विष्णु भगवान शेषनाग पर नहीं सो रहे हैं।
(ii) शायद विष्णु भगवान शेषनाग पर सो रहे हैं।

(ख) (i) दो साल बाद त्रिवेणी की शादी नहीं होगी।
(ii) शायद दो साल बाद त्रिवेणी की शादी होगी।

(ग) (i) चूहेदानी में नेवला पकड़ कर मत रखना।
(ii) शायद चूहेदानी में नेवला पकड़ा होगा।

(घ) (i) मैं दही खाकर नहीं जाऊँगा।
(ii) शायद मैं दही खाकर जाऊँगा।

3. सोना — (i) मुझे सोना है।
(ii) यह हार सोने का है।

हार — (i) श्रीलंका भारत से मैच हार गयी।
(ii) यह मोतियों का हार है।

बस — (i) हम बस से दिल्ली जाएंगे।
(ii) बस रहने दो, यह तुमसे नहीं होगा।

पाठ 17 - तुम कब जाओगे अतिथि

लिखित

1. (क) भगवान (ख) अतिथि अधिक दिनों तक ठहरेगा।
(ग) देवता और मनुष्य (घ) उससे पहले अतिथि को लौट जाना चाहिए।
2. (क) लेखक ने अतिथि से कहा। (ख) पत्नी ने लेखक से।
(ग) लेखक ने पत्नी से। (घ) पत्नी ने लेखक से।
(ङ) लेखक ने स्वयं से।
3. (क) चार दिनों तक।
(ख) अपनी सीमा ने नम्रता से।
(ग) एक शानदार मेहमान नवाजी के साथ।
(घ) लंच की गरिमा।
(ङ) डिनर से खिचड़ी पर आ गए थे।
(च) भावभीनी विदाई।
(छ) मेहमान का धोबी को कपड़े धुलने के लिए देना।
(ज) संबंधों में खट्टास का आ जाना/अर्थात् मधुरता खत्म होना।
(झ) सौहार्द्र बोरियत में बदल गया, डिनर खिचड़ी में बदल गया।

भाषा ज्ञान

1. (क) चंद्रमा, शशि। (ख) निकटता, समीपता।
(ग) किनारा, तीर। (घ) निरंतर, लगातार।

(ङ) गरमी, उग्रता। (च) खतरा, भय।

2. (क) हम तुम्हें स्टेशन तक नहीं छोड़ेंगे।
   (ख) क्या इनके कपड़े देने हैं?
   (ग) सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो जाएगी।

पाठ 18 - धर्म की आड़

लिखित

1. (क) धर्म की। (ख) धर्म की।
   (ग) गरीबों की झोंपड़ियों का। (घ) इन दोनों से।
   (ग) ये सभी।
2. (क) धर्म (ख) पाप, भोगना,
   (ग) दुहाइयाँ, दीन-दीन (घ) भारतवर्ष, झगड़े
   (ङ) ईमान, सुगम
3. (क) उत्पात किए जाते हैं, जिद की जाती है।
   (ख) अपने आचरण में सुधार करना चाहिए।
   (ग) जिस दिन स्वाधीनता के क्षेत्र में खिलाफत मुल्ला-मौलवियों और धर्माचार्यों को स्थान दिया जाना आवश्यक समझा गया।
   (घ) धर्म और ईमान की रक्षा के लिए प्राण तक दे देना सही है।
   (ङ) साधारण आदमी का धर्म व ईमान के प्रति अंधविश्वास का फायदा उठाते हैं।
   (च) दो घंटो तक पूजापाठ, पाँच वक्त की नमाज करना और दिन-भर बेईमानी करना, दूसरों को तकलीफ देना—आना वाले समय में नहीं टिकेगा।
   (छ) देश में मजहबी, पागलपन, प्रपंच और उत्पात करना स्वाधीनता के खिलाफ है।
   (ज) धनी गरीबों की झोपड़ियों का मजाक उड़ाते हैं व गरीब चूसे जाते हैं।
   (झ) ला-मजहब व नास्तिक लोग।

भाषा ज्ञान

1. (क) दुर्गम (ख) अनियंत्रित (ग) सदुपयोग
   (घ) बेईमान (ङ) अधर्म (च) पराधीनता
   (छ) नि:स्वार्थ (ज) असाधारण (झ) आस्तिक
2. (क) उपद्रव, खुशफात।
   (ख) महान, दयालू।
   (ग) धनवान, दौलतमंद।
   (घ) कपटी, पाखंडी।
   (ङ) गलत, अनुचित।
   (च) परख, जाँच।
   (छ) सज्जनता, शराफत।
   (झ) उचित, उपयुक्त।
3. (क) सज्जनता (ख) धर्म
   (ग) गँवार (घ) पूजा
   (ङ) उपयुक्त